दुर्लभे भारते वर्षे जन्म तस्मान्मनुष्यता।
मानुषे दुर्लभं चापि स्व-स्व धर्मे प्रवर्तिता।।

भावार्थ : भारतवर्ष में जन्म लेना ही कठिन है, उससे भी कठिन है मानव रूप पाना और उससे भी कठिन है अपने अपने कर्तव्य में प्रवृत्त होना।

वर्ष : 15 अंक : 07

मातृवन्दना

श्रावण-भाद्रपद, कलियुगाब्द
5117, अगस्त, 2015

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

✡

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

✡

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

जल ही जीवन है

ऐसा प्रतीत होता है कि जल के बिना मानव ही नहीं अपितु पूरी सृष्टि ही प्यासी है। ऐसा नहीं है कि यहां जल का अभाव है। अपने देश में अपार जल सम्पदा विद्यमान है किन्तु समुचित व्यवस्था के अभाव तथा पर्यावरण असंतुलन एवं निर्ममता पूर्ण दोहन से सर्वत्र जल की कमी दृष्टिगत होती है। नदियां, झीलें, झरने, जलाशय, तालाब, पोखर, कुंए और बावड़ियां हमारी भूतलीय जल-सम्पदा है। इनके संरक्षण एवं संवर्धन में हमसे निरन्तर चूक होती रही है। यहां एक ओर मानवकृत पर्यावरण प्रदूषण के कारण ऋतु चक्र में असंतुलन से नदियों, झीलों तथा अन्य जलाशयों का आकार घटता जा रहा है, वहीं दूसरी ओर पुरातन शैली के तालाब, कुंओं एवं बावड़ियों का नामों निशान ही मिटता जा रहा है। जल संग्रहण की पुरखों की आदत को हमने भुला दिया है।

सम्पादकीय	जल ही जीवन है	3
प्रेरक प्रसंग	क्रोध सबसे बड़ा शत्रु	4
चिंतन	हम सत्य से दूर क्यों भागते हैं	5
आवरण	छोटी-छोटी असावधानियों से भूजलस्तर जाएगा पाताल	6
संगठनम्	सिंधु दर्शन उत्सव	10
देवभूमि	शिरगुल के दरबार में सता रहा पानी	11
देश-प्रदेश	अब बनेंगे120 कामधेनु नगर	13
पुण्यस्मरण	एक और ऋषि का अवसान	15
ग्राम विकास	देश के कृषकों को अन्ततः क्या मिला	17
काव्य जगत	माँ	18
स्वास्थ्य	औषधि भी है पानी	19
पुण्यजयंती	श्री रामचरितमानस के पांच उपदेश	20
महिला जगत	अपने दम पर पाया मुकाम	21
दृष्टि	चार साल पहले ऑटो चलाते थे, अब प्लेन उड़ाते हैं	22
संस्कृतम्	वार्तालाप वाक्यानि	23
विविध	राष्ट्रीयता की रक्षा, समरसता के बंधन से	24
विश्व-दर्शन	मंगलयान के लिए इसरो को अमेरिकी सम्मान	26
घूमती कलम	साध्वी ऋतंभरा का वात्सल्य ग्राम	27
समसामयिकी	डिजिटल इंडिया रिपोर्ट	29
बाल-जगत	इस झंडे को प्रणाम करो	31

पाठकों के पत्र

सम्पादक महोदय,

जून मास का मातृवन्दना अंक पढ़ा जिसमें योग और आयुर्वेद के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दी गई है। सम्पादकीय लेख में पर्यावरण को प्रदूषणमुक्त करने की बात की गई है। मेरा मानना है कि इसके लिए पहला उपाय अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखना है। वर्ष 2014 के दिसम्बर अंक में भी स्वच्छता अभियान के सम्बंध में अच्छी जानकारी दी गई थी। आपका सम्पादकीय तथा अन्य लेख पूर्ण तथ्यों पर आधारित है। सरकार तथा समाज को स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि सभी लोग इस अभियान का अंग बनेंगे तो चिकित्सा से बेहतर परहेज वाली कहावत साकार हो सकेगी। समाज यदि चाहे तो सब कुछ कर सकता है परन्तु समाज को बार-बार जागरूक करने की आवश्यकता है। गांवों में अज्ञानता के कारण लोग इस ओर विशेष ध्यान नहीं देते इसलिए साम-दाम-दण्ड-भेद वाली नीति भी इस अभियान में अति आवश्यक है। जिस तरह भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को 18 गीता के उपदेश देकर युद्ध हेतु तैयार किया था उसी प्रकार जनता को बार-बार स्वच्छता की शिक्षा देनी पड़ेगी तभी जाकर स्वच्छ तथा स्वस्थ भारत का सपना पूर्ण होगा। मीडिया इस सन्दर्भ में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है। ✠

लक्ष्मी चंद, कसौली

महोदय,

आप ने मातृवन्दना के जुलाई मास के अंक में 'सात्विक आहार जीवन की संजीवनी' से जो जानकारियां सम्पादकीय तथा अन्य रचनाओं द्वारा दी है, बहुत ही उपयोगी हैं। इन्हें पढ़ कर याद आई कि यदि हमारा खान-पान शुद्ध हो, मन में अविचल ज्ञान रहे निर्बलता हो दूर हमारी, देश हर वक्त जवान रहे। आज हम लोग खान-पान के कारण ही बहुत सी बिमारियों से ग्रस्त हैं। आज हर व्यक्ति आलीशान होटल में खाना पसंद करता है। बड़ी-बड़ी गाडियों में घूमना पसंद करता है। कभी भी व कहीं भी जो मिले खान पान शुरू कर देता है, व अपने तथा अपने परिवार के प्रति बिलकुल भी सजग नहीं रहता। इसलिए आज के समय में हमें इन सब तरह की आदतों पर विराम लगाने की आवश्यकता है। आज हमें प्रकृति के नियमों के अनुसार ही यदि विचरण करें तो स्वभाविक तौर पर हम अपने आप को अपने पर्यावरण को अपने देश को व आने समाज को अधिक स्वच्छ रख सकते हैं। हमें अपने खान-पान, आचार-विचार, रहन-सहन, अग्नि, वायु तथा जल को और अधिक शुद्ध बनाने की आवश्यकता है। तभी हम सब देश वासियों का स्वास्थ्य ठीक रह सकता है।

शंकर दत्त शर्मा, सोलन

स्मरणीय दिवस (अगस्त)

डॉ0 यशवन्त सिंह परमार जन्मदिवस	04 अगस्त
एकादशी	10 अगस्त
स्वतन्त्रता दिवस	15 अगस्त
गोस्वामी तुलसीदास जयंती	22 अगस्त
एकादशी	26 अगस्त
रक्षा बन्धन	29 अगस्त
राष्टीय खेल दिवस	29 अगस्त

जल ही जीवन है

सृष्टि का निर्माण पांच तत्वों से हुआ है। जल उन पांच तत्वों में से एक है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त यह जलसम्पदा चराचर जगत के लिए अनुपम उपहार है। जल के अभाव में जीवन की कल्पना तक करना असम्भव है। जल है तो प्राणी है, जल है तो पेड़ पौधे जीव जन्तु हैं। हमारा देश कृषि प्रधान देश है। हमारे देश की आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ है कृषि। इस क्षेत्र की समस्त उपलब्धियां मुख्यत: जल पर ही निर्भर करती हैं। देश के सर्वांगीण विकास हेतु जल एक कारक तत्व है। कृषि क्षेत्र के अतिरिक्त हरियाली क्षेत्र बढ़ाने में, निर्माण कार्यों में, विभिन्न वस्तुओं अथवा पदार्थों के उत्पादन में शोध स्नानादि, स्वच्छता, वस्त्र प्रक्षालन एवं भोजनादि में सर्वत्र जल की प्राथमिक आवश्यकता बनी रहती है। बड़े-बड़े कारखानों, औद्योगिक क्षेत्रों, राजकीय एवं निजी आवासीय क्षेत्रों, छोटे-बड़े कारखानों में जल की बेहद मांग सरकार की सिरदर्दी का कारण बनी रहती है। ऐसा प्रतीत होता है जल के बिना मानव ही नहीं अपितु पूरी सृष्टि ही प्यासी है। ऐसा नहीं है कि यहां जल का अभाव है। अपने देश में अपार जल सम्पदा विद्यमान है किन्तु समुचित व्यवस्था के अभाव तथा पर्यावरण असंतुलन एवं निर्ममता पूर्ण दोहन से सर्वत्र जल की कमी दृष्टिगत होती है। नदियां, झीलें, झरने, जलाशय, तालाब, पोखर, कुंए और बावड़ियां हमारी भूतलीय जल-सम्पदा हैं। इनके संरक्षण एवं संवर्धन में हमसे निरन्तर चूक होती रही है। यहां एक ओर मानवकृत पर्यावरण प्रदूषण के कारण ऋतु चक्र में असंतुलन से नदियों, झीलों तथा अन्य जलाशयों का आकार घटता जा रहा है, वहीं दूसरी ओर पुरातन शैली के तालाब, कुंओं एवं बावड़ियों का नामों निशान ही मिटता जा रहा है। जल संग्रहण की पुरखों की आदत को हमने भुला दिया है। भूमिगत जल का हम बड़ी निर्ममता से दोहन कर रहे हैं, जिस कारण बड़ी तेजी से जलस्तर नीचे खिसकता जा रहा है। वैज्ञानिकों की मानें तो आने वाला सबसे बड़ा संकट पानी का अभाव ही होगा। इसलिए हमें शीघ्र ही सचेत होना पड़ेगा। जल की आपूर्ति का सबसे बड़ा स्त्रोत अब भी हमारे पास उपलब्ध है, वह है वर्षा का जल। यदि हम जल को सही ढंग से संग्रहण करने का समुचित उपाय कर लें तो निश्चय ही जलाभाव की विभीषिका से हम मुक्त हो सकते हैं। हर घर में लाजिमी तौर पर वर्षा जल के भण्डारण की व्यवस्था होनी चाहिए। यदि परिवार के पास गांव में कृषि योग्य भूमि है तो मिट्टी की सघनता के अनुसार खेतों में भी वर्षा जल के संग्रहण हेतु तालाब/पोखर आदि निर्मित हों। जल ही प्रलय का भी कारण है। हम जानते ही हैं कि पर्यावरण असंतुलन एवं ग्लोबल वार्मिंग के कारण या तो आसमान बरसता नहीं यदि बरसता है तो इतना जम कर कि मानो सब कुछ बहा ले जाने की ताक में हो। इसीलिए भारत के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की नदियों को परस्पर मिलाने की योजना निश्चित रूप से बाढ़ से बचाने में कारगर सिद्ध हो सकती थी। वर्तमान केंद्रीय सरकार भी इस पर गम्भीरता से विचार कर रही है। यदि यह योजना भविष्य में क्रियान्वित हो जाए तो बरसात में उमड़ती नदियों से उत्पन्न बाढ़ों से काफी हद तक राहत मिल सकती है, साथ ही नई नहरों का निर्माण सिंचाई क्षेत्र का विस्तार हो सकता है। सूक्ष्म सिंचाई एवं लिफ्ट सिंचाई योजनाओं को भी बढ़ावा देना जरूरी है। जल विभाजक प्रबंधन के अंतर्गत अधिकाधिक सहायता राशि का प्रावधान करना भी आवश्यक है। भूमिगत जल के पुन: आवेशन के लिए उपाय करने होंगे। एक बात और हम हिमाचल वासियों को स्वच्छ एवं निर्मल जल की सौगात मिली हुई है। हमारे प्रदेश की सभी नदियां मैदानी इलाकों से गुजरती हैं। हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम नदियों तथा उनमें जुड़ने वाले उपनद और नालों को प्रदूषित न करें, उनका जल निर्मल रखें ताकि हम बड़े आत्म विश्वास से मैदानी इलाकों में रहने वाली जनता से कह सकें कि हमने आपको निर्मल एवं स्वच्छ जल दिया है, आप भी इसे निर्मल रखें। ✠

क्रोध सबसे बड़ा शत्रु

श्रीकृष्ण उनके बड़े भाई बलराम और मित्र सात्यकि एक घने वन से होकर गुजर रहे थे तो रात्रि को वन में ठहर गए। उस वन में हिंसक पशुओं के साथ राक्षसों का भी डर था, इसलिए तय हुआ कि रात के तीनों प्रहर वे तीनों बारी-बारी से पहरा देंगे और चौथे प्रहर आगे चल पड़ेंगे। प्रथम प्रहर में सात्यकि पहरे पर थे। श्रीकृष्ण व बलराम सो रहे थे। तभी एक भयंकर राक्षस आया। उसने आक्रमण करने की कोशिश की तो सात्यकि को क्रोध आ गया। वे उससे लड़ने लगे। ज्यों-ज्यों सात्यकि ज्यादा क्रोध करते राक्षस का आकार व बल और बढ़ जाता। राक्षस ने सात्यकि को घायल कर दिया। जब प्रथम प्रहर बीत गया तो राक्षस अदृश्य हो गया। तब सात्यकि ने बलराम को जगाया। जब बलराम पहरा देने लगे तो उनके साथ भी वैसा ही हुआ। दूसरा प्रहर बीतने पर श्रीकृष्ण उठे। जब राक्षस उनके सामने आया तो क्रोध करने के बजाए वे हंसने लगे। उनके हंसने से राक्षस का बल घटने लगा, साथ ही उसके शरीर का आकार छोटा होने लगा।

राक्षस जितनी तेजी से झपटता श्रीकृष्ण उतनी ही नरमी से उसके वार को झेलते हुए हंस पड़ते। धीरे-धीरे राक्षस एक कीड़े जितना छोटा हो गया। श्रीकृष्ण ने उसे अपने दुपट्टे के छोर से बांध लिया। चौथे प्रहर जब सात्यकि और बलराम उठे तो श्रीकृष्ण ने उनकी घायल अवस्था का कारण पूछा। उन्होंने राक्षस की बात बताई। तब श्रीकृष्ण दुपट्टे में बंधे कीड़े को दिखाते हुए बोले-यही है वह राक्षस। वस्तुतः क्रोध ही राक्षस है। जितना क्रोध आप करते गए, यह उतना बढ़ता गया। मैंने क्रोध नहीं किया तो यह छोटा हो गया। क्रोध न करें तो उसका विस्तार नहीं हो सकता। ✠

सामाजिक समरसता

प्रसंग चित्रकूट का है। भरत, शत्रुघ्न, मुनिवर वसिष्ठ, तीनों माताएं, नगरवासी, सेवक, सेनापति, मंत्री सब श्रीराम के दर्शनों की प्रतीक्षा में थे। गुह ने श्रीराम को सबके आने की सूचना दी थी। श्रीराम भरत और गुह को लेकर अयोध्यावासियों का स्वागत करने के लिए आगे बढे। सर्वप्रथम श्रीराम ने गुरु वसिष्ठ के चरणों का स्पर्श किया। गुरूदेव ने उन्हें आशीष दिया। श्रीराम एक-एक कर सब से मिले। गुरु वसिष्ठ जी की चरण-धूलि को मस्तक पर लगाने की गुह की उत्कट इच्छा थी। किन्तु इतने बड़े लोक-विख्यात मुनि के निकट जाने से उसे संकोच हो रहा था। वह आगे बढ़कर चरण स्पर्श के लिए कसमसाता, किन्तु फिर झिझक कर पीछे हट जाता। उसकी इस व्याकुलता की ओर श्रीराम का ध्यान था, किन्तु मुनि वसिष्ठ उधर देख नहीं रहे थे। गुह ने इस स्थिति में भी मार्ग निकाला। गुरू वसिष्ठ को उससे मिलना अच्छा लगेगा या नहीं यह वह नहीं जानता था और उनको धर्म संकट में भी नहीं डालना चाहता था। अतः दूर से ही अभिवादन कर लिया। गुरू वसिष्ठ ने भी श्रंगवेश्वरपुर के उस श्रद्वालु भील गुह को पास बुलाए बिना ही वहीं से आशीर्वाद दे दिया।

श्रीराम यह सब देख रहे थे। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा, उन्होंने ने एक युक्ति सोची। गुह का हाथ पकड़कर वे स्वयं वसिष्ठ जी के पास गये और बोले-'गुरूदेव क्या आपने इसे पहचाना, यह मेरा परम मित्र गुह है।'

गुरु वसिष्ठ ने राम का अभिप्राय समझ लिया। गुरूदेव ने राम का सखा जान कर गुह को गले से लगाया। उन दोनों के दिव्य मिलन को देखकर ही श्रीराम की आंखों में हर्ष की अश्रु धारा बह निकली। यह मिलन सामाजिक समरसता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जिसे श्रीराम ने अपने आचरण से हम सब के लिए प्रस्तुत किया। भील गुह तथा मन्त्र- दृष्टा मुनि वसिष्ठ का मिलन एक क्रान्ति है। समता के लिए ममता का एक सन्देश है। आज भी इस मूल-मन्त्र की सामाजिक समस्याओं के निदान के लिए आवश्यकता है।✠

हम सत्य से दूर क्यों भागते हैं, सत्य से दूर भागना अर्थात् ईश्वर से दूर भागना है।

– के.सी. शर्मा

सत्य कर्म से जुड़ा हुआ है। ईश्वर ही सत्य है इसलिए शिवपुराण में कहा है 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' अर्थात् सत्य ही शिव और शिव ही सुन्दर है। हमें मान लेना चाहिए अगर ईश्वर ही सत्य है या सत्य ही ईश्वर है तो हमें अपनी जिन्दगी में सत्य को ही धारण करना चाहिए। सत्य को जब हम अपने कर्म में उतार लेंगे तो निश्चय से ईश्वर हमारी सांसों व प्राण में वास कर जाएंगे।

सत्य को अपनाने से मनुष्य अपना सार्थक जीवन व्यतीत कर सकता है। उसे ईश्वर की सहायता या इच्छा पाने के लिए कठोर साधना या लम्बी तपस्या करने की कतई जरूरत नहीं पड़ती। यहां तक की सत्य में इतनी शक्ति है कि मनुष्य को अपनी रक्षा हेतु कोई शस्त्र धारण करने की जरूरत नहीं रहती। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द ने सत्य को धारण कर सारे विश्व को अपनी विचारधारा से ऐसा प्रभावित किया कि यह दोनों आज भी प्रासंगिक हैं, प्रेरणा स्त्रोत हैं। जो काम शस्त्र के द्वारा कराना संभव नहीं उसे सत्य से संभव किया जा सकता है।

झूठ को सदैव सत्य ने परास्त किया है। मनुष्य जब सत्य क प्रकाश से तप उठता है तब मनुष्य के बीच बसा झूठ सत्य के तप से पिघल जाता है। हमारी तमाम सामाजिक तथा व्यक्तिगत समस्याओं का अगर कोई कारण है तो झूठ है। झूठ बोलना उतना ही घृणित कार्य है जितना निहत्थे इन्सान का वध करना। लेकिन खेद है कि समाज स्वयं सत्य की तलाश नहीं करता।

हमने सत्य तलाशने का जिम्मा न्यायपालिकाओं को दे रखा है। जब इन्सान के भीतर का आदमी मर जाता है तब वह झूठ के सहारे जीवन व्यतीत करने लगता है। झूठी गवाही, झूठे आरोप, झूठे मुकदमें हम न्यायपालिका के समक्ष रखते हैं। सच उगलवाने के लिए सिविल पुलिस ब्रेन मेपिंग और लाई डिटेक्टर का प्रयोग करती है। हम मान रहे हैं कि हमें झूठ नहीं सच चाहिए, सत्य के बगैर समाज, सरकार, परिवार और न ही संसार चलेगा। एफिडेविट के द्वारा हम अपने वचनों को स्वयं ही सत्यापित करते हैं। अर्थात् हम यह कहते हैं जो मैंने कहा वह सत्य है। सत्य हो तो लम्बी चौड़ी सरकारी व्यवस्था की जरूरत नहीं।

हमने सत्य तलाशने का जिम्मा न्यायपालिकाओं को दे रखा है। जब इन्सान के भीतर का आदमी मर जाता है तब वह झूठ के सहारे जीवन व्यतीत करने लगता है। झूठी गवाही, झूठे आरोप, झूठे मुकदमें हम न्यायपालिका के समक्ष रखते हैं। सच उगलवाने के लिए सिविल पुलिस ब्रेन मेपिंग और लाई डिटेक्टर का प्रयोग करती है। हम मान रहे हैं कि हमें झूठ नहीं सच चाहिए, सत्य के बगैर न समाज, न सरकार, न परिवार और न ही संसार चलेगा। एफिडेविट के द्वारा हम अपने वचनों को स्वयं ही सत्यापिन करते हैं। अर्थात् हम यह कहते हैं जो मैंने कहा वह सत्य है।

देश में आज व्यापक भ्रष्टाचार है जिसे सरकारें कठोर से कठोर नियम बना कर दूर करना चाहती हैं। भ्रष्टाचार का जन्म झूठ के पालने से हुआ है, उसे कानूनी डर से हम दूर नहीं कर सकते। हमें सत्यमेव जयते का अर्थ अपने आचरण और व्यवहार में उतार कर जीवन यापन करना होगा।

हमारा राष्ट्रीय उद्घोष है 'सत्यमेव जयते।' हम झूठ का सर्मथन कर अपने लिए व्यवस्थाएं तय कर रहे हैं किंतु हमें चाहिए विकास, न्याय, सौहार्द, शांति, सम्पन्नता, समानता जो सही अर्थो में सत्य के बिना संभव नहीं। इसलिए सत्य ही हमारी तमाम इच्छाओं की पूर्ति कर सकता है। ✠

छोटी-छोटी असावधानियों से भूजल स्तर जाएगा पाताल

हमारी अनेकों समस्याएं हैं, वह थमने का नाम नहीं ले रही हैं। उन समस्याओं में भूजल का गहरा होता स्तर वर्तमान में राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया है। हम हर क्षण राष्ट्र के अधिकांश भूजल संसाधनों का कदम-कदम पर दुरूपयोग कर रहे हैं, परिणाम स्वरूप भूजलस्तर नीचे जा रहा है।

* हम दैनिक उपयोग में अपनी आवश्यकता से कहीं अधिक भूजल दोहन करते हैं। हम रसोई में खाद्य पदार्थों की धुलाई एवं बर्तनों की सफाई के समय नल खुला रखते हैं। व्यर्थ और गंदा जल नाली में गिरा दते हैं। आइस ट्रे से बर्फ छुड़वाने के लिए हम खुले नल का प्रयोग करते हैं।
* हम भूमिगत जल की टंकी भरने के लिए उसमें टोंटी नहीं लगाते हैं। टोंटी लगी हो तो उसे खोल देते हैं या ढीली रख देते हैं।
* छत पर 500 या 1000 लीटर वाली पानी की टंकी भरने के लिए हम नल से सीधे जल उठाऊ मोटर का प्रयोग करते हैं। पानी से भर जाने के पश्चात्, जल की टंकी से व्यर्थ में पानी बाहर बहता रहता है या उससे दिन-रात जल का रिसाव होता रहता है।
* घर अथवा सार्वजनिक स्नानगृह में हम खुले नल या शॉवर के नीचे लम्बे समय तक स्नान करते रहते हैं। खुले नल के आगे कपड़े धोते हैं, दंत मंजन करते हैं, दाढ़ी बनाते हैं।
* घर अथवा सार्वजनिक शौचालय में नल का पानी बहता हुआ छोड़ देते हैं, बहता हुआ दिखे तो भी हम उसे बंद नहीं करते।
* नल से रबर पाइप लगाकर हम घर, पशु, पशुशाला ही की नहीं गाड़ी की भी सफाई करते हैं। रबर पाइप से जगह-जगह जल रिसाव होता रहता है।

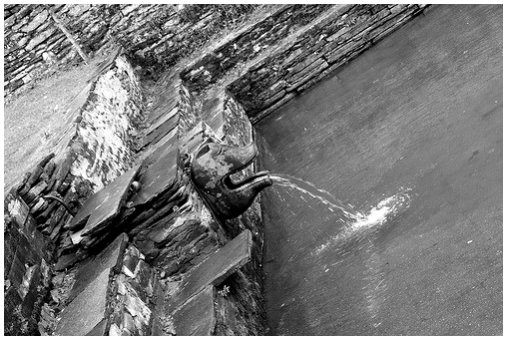

* नल से रबर पाइप लगाकर हम क्यारी व पौधों की सिंचाई करते हैं। सिंचाई हेतु यूं ही पटवन करते रहते हैं, उसे उचित समय क्रम से नहीं करते हैं। लॉन को बार बार पाटते हैं। नलकूप द्वारा आवश्यकता से कहीं अधिक जल दोहन करते हैं। हम जलवायु के आधार पर परंपरागत खेती करना, फल व इमारती लकड़ी प्राप्त करने के लिए नई पौध लगाना, दिन प्रति दिन भूलते जा रहे हैं। सिंचाई के लिए हम गर्मी और तेज हवा के दिनों में भी जल का प्रयोग करते हैं। सिंचाई की पाइप के जोड़ों/कपलिंगों से जल रिसाव होता रहता है। इस तरह भूजल भण्डार का कई लीटर पानी हम यूं ही व्यर्थ में नष्ट कर देते हैं। जल को अमूल्य संसाधन समझने पर भी हम यह नहीं सोचते कि पानी न हो तो क्या होगा? वर्षाकाल में अपने मकान की छतों से गिरने वाले पानी के संग्रह की हमने अब तक व्यवस्था नहीं की। जमीन के साथ बहते नाले में चैक डैम आदि बना कर जलसंग्रहण नहीं किया। पुराने तालाब, पोखर, कुओं का पुनरोद्धार नहीं किया।
* परिवार नियोजन की शिथिलता में जनसंख्या बढ़ने, प्रौद्योगिकी के विस्तार और शहरीकरण होने के कारण प्रतिदिन भूजल की मांग में अत्यधिक वृद्धि हुई है जबकि भूजल पुनर्भरण की प्रतिशत मात्रा कम रही है। नवनिर्माण कार्यों में हम भूजल का बहुत ज्यादा प्रयोग करते हैं। अगर हम समय रहते स्वयं जागरूक नहीं हुए, स्वेच्छा और आवश्यकता से अधिक भूजल का यूं ही दोहन एवं दुरूपयोग करते रहे तो वह दिन दूर नहीं कि भूजलस्तर पाताल गमन अवश्य करेगा। ऐसी स्थिति में क्या हम उसे रोकने के लिए प्रयासरत हैं?क्या हम उसे सहजता से रोकने में सफल भी हो पाएंगे। ✠

संकट अल्पवर्षा नहीं कुछ और है

पंकज चतुर्वेदी

जो आशंका इस साल अप्रैल में जताई जा रही थी, उसके विपरीत जून में तो जमकर बरसे बादल। सामान्य से 14 फीसदी ज्यादा बारिश दर्ज की गई है। यहीं नहीं, भारत के खेती-प्रधान इलाकों में अधिकांश जगह ताल-तलैया, नदी-नाले क्षमता से ज्यादा भर गए हैं। बहुत से इलाकों में बाढ़ के हालात हैं। अब कहा जा रहा है कि आषाढ़ में जो बरस गया वह ठीक है, सावन-भादो रीते जाएंगे। सवाल उठता है कि क्या अब कम बादल बरसे तो देश के सामने सूखे या पानी के संकट का खतरा खड़ा होगा? यह सवाल हमारे देश में लगभग हर तीसरे साल खड़ा हो जाता है कि औसत से कम पानी बरसा तब क्या होगा?देश के 13 राज्यों के 135 जिलों की कोई दो करोड़ हेक्टेयर कृषि भूमि प्रत्येक दस साल में चार बार पानी के लिए त्राहि-त्राहि करती है। इस साल भी मौसम विभाग ने चेता दिया है कि बारिश कम हो सकती है। जो किसान अभी ज्यादा और असमय बारिश की मार से उबर नहीं पाया था, उसके लिए एक नई चिंता। उधर अभी अच्छी बारिश हुई है, लेकिन दाल, सब्जी, व अन्य उत्पादों के दाम बाजार में आसमानी हो गए। केंद्र से लेकर राज्य और जिले से लेकर पंचायत तक इस बात का हिसाब-किताब बनाने में लग गए हैं कि यदि कम बारिश हुई, तो राहत कार्य के लिए कितना बजट चाहिए और यह कहां से मिलेगा। असल में इस बात को सब नजरअंदाज कर रहे हैं कि यदि सामान्य से कुछ कम बारिश भी हो और प्रबंधन ठीक हो, तो समाज पर इसके असर को गौण किया जा सकता है। जरा मौसम महकमे की घोषणा के बाद उपजे आतंक की हकीकत जानने के लिए देश की जल-कुंडली भी बांच ली जाए। भारत में दुनिया की कुल जमीन या धरातल का 2.45 फीसदी क्षेत्रफल है। दुनिया के कुल संसाधनों में से चार फीसदी हमारे पास हैं व जनसंख्या की भागीदारी 16 प्रतिशत है। हमें प्रतिवर्ष बारिश से कुल 4000 घन किलोमीटर पानी प्राप्त होता है, जबकि धरातल या उपयोग लायक भूजल 1869 घन किलोमीटर है। इसमें से महज 1122 घन मीटर पानी ही काम आता है। जाहिर है कि बारिश का जितना हल्ला होता है, उतना उसका असर पड़ना चाहिए नहीं। हां, एक बात सही है कि कम बारिश में भी उग आने वाले मोटे अनाज जैसे ज्वार, बाजरा, कूटकी आदि की खेती व इस्तेमाल सालों-साल कम हुआ है, वहीं ज्यादा पानी मांगने वाले सोयाबीन व अन्य नकदी फसलों ने खेतों में अपना स्थान बढ़ाया है। इसके चलते बारिश पर निर्भर खेती बढ़ी है। तभी थोड़ा भी कम पानी बरसने पर किसान मायूस दिखता है। देश के उत्तरी हिस्से में नदियों में पानी का अस्सी फीसदी जून से सितंबर के बीच रहता है, दक्षिणी राज्यों में यह आंकड़ा 90 प्रतिशत का है। जाहिर है कि शेष आठ महीनों में पानी का जुगाड़ न तो बारिश से होता है और न ही नदियों से। कहने को तो सूखा एक प्राकृतिक संकट है, लेकिन आज विकास के नाम पर इन्सान ने भी बहुत कुछ ऐसा किया है जो कम बारिश के लिए जिम्मेदार है। राजस्थान के रेगिस्तान और कच्छ के रण गवाह हैं कि पानी की कमी इंसान के जीवन के रंगों को मुरझा नहीं सकती है। वहां सदियों से, पीढ़ियों से बेहद कम बारिश होती है। इसके

पानी की हर बूंद को स्थानीय स्तर पर सहेजने, नदियों के प्राकृतिक मार्ग में बांध, रेत निकालने, मलबा डालने, कूड़ा मिलाने जैसी गतिविधियों से बचकर, पारंपरिक जलस्त्रोतों-तालाब, कुएं, बावड़ी आदि के हालात सुधार कर, एक महीने की बारिश के साथ साल भर के पानी की कमी से जूझना कतई कठिन नहीं है। सूखे के कारण जमीन का कड़ा होना, या बंजर होना, खेती में सिंचाई की कमी, रोजगार घटने व पलायन, मवेशियों के लिए चारे या पानी की कमी जैसे संकट उभरते हैं। यहां जानना जरूरी है कि भारत में औसतन 110 सेंटीमीटर बारिश होती है, जो कि दुनिया के अधिकांश देशों से बहुत ज्यादा है। यह बात दीगर है कि हम बरसने वाले कुल पानी का महज 15 प्रतिशत ही संचित कर पाते हैं।

बाजवूद वहां लोगों की बस्तियां हैं, उन लोगों का बहुरंगी लोक रंग है। वे कम पानी से जीवन जीना और पानी की हर बूंद को सहेजना जानते हैं। पानी की हर बूंद को स्थानीय स्तर पर सहेजने, नदियों के प्राकृतिक मार्ग में बांध, रेत निकालने, मलबा डालने, कूड़ा मिलाने जैसी गतिविधियों से बचकर, पारंपरिक जलस्त्रोतों-तालाब, कुएं, बावड़ी आदि के हालात सुधार कर, एक महीने की बारिश के साथ साल भर के पानी की कमी से जूझना कतई कठिन नहीं है। सूखे के कारण जमीन का कड़ा होना या बंजर होना, खेती में सिंचाई की कमी, रोजगार घटने व पलायन, मवेशियों के लिए चारे या पानी की कमी जैसे संकट उभरते हैं। यहां जानना जरूरी है कि भारत में औसतन 110 सेंटीमीटर बारिश होती है, जो कि दुनिया के अधिकांश देशों से बहुत ज्यादा है। यह बात दीगर है कि हम बरसने वाले कुल पानी का महज 15 प्रतिशत ही संचित कर पाते हैं। कम पानी के साथ बेहतर समाज का विकास कतई कठिन नहीं हैं। बस एक तो हर साल, हर महीने इस बात के लिए तैयारी करनी होगी कि पानी की कमी है, दूसरा ग्रामीण अंचलों की अल्प वर्षा से जुड़ी परेशानियों के निराकरण के लिए सूखे का इंतजार करने के बनिस्पत इसे नियमित कार्य मानना होगा।✠

साभार: अमर उजाला

लापरवाही से दूषित हो रहा नदी नालों का जल

देवभूमि है, इसलिए नदियों की निर्मल धारा समय-समय के साथ-साथ दूषित तो हो रही है पर अभी लंदन की टेम्स के इतिहास व दिल्ली में यमुना के वर्तमान जैसा हाल यहां नहीं हुआ है। इसीलिए अपनी प्राकृतिक संपदा पर इतराने वाले पहाड़ के लोग इन नदियों की स्वच्छता का महत्व नहीं समझ पा रहे हैं। ऊंचे पहाड़ों से अमृत समान पानी के साथ कलकल बहने वाली नदियां रिहायशी इलाकों में उतर कर आम जन की लापरवाही से दूषित हो रही हैं। बावजूद इसके कि इन्हीं नदी-नालों में शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति के लिए छोटी-बड़ी अनेक परियोजनाएं लगी हैं, लेकिन विडंबना देखिये कि इनके मुख्य जलस्त्रोत पर ही कूड़ा कचरा व गंदगी के ढेर लगे होते हैं। यही नहीं नदी के साथ लगते कस्बों में तो घरों व दुकानों का गंदा पानी भी नदियों में छोड़ा जा रहा है, जिससे नदीय पर्यावरण को संकट उत्पन्न होता जा रहा है। जिला मुख्यालय सोलन सहित आसपास के ग्रामीण इलाकों व धर्मपुर तक पानी देने वाली गिरि नदी और शहर में बरसों से लोगों की प्यास बुझा रहा अश्विनी खड्ड, इनमें पेयजल योजनाओं के लिए जिन स्थानों से पानी उठता है, वहां बहते पानी के बावजूद गंदगी है। यहां न केवल पिकनिक मनाने आए लोगों के खाने-पीने के पैकेट व बोतलें पड़ी होती हैं, बल्कि ऊपर से बहकर अन्य कचरा भी

आसपास फैला रहता है। यही हाल राष्ट्रीय राजमार्ग कालका-शिमला के साथ बहने वाली कौशल्या नदी और अर्की-कुनिहार के इलाके में गंभर नदी का है। बस यही नहीं हो जाती, सोलन शहर से विभिन्न दिशाओं की तरफ निकलने वाले नालों में ही बाजार व रिहायशी क्षेत्र के घरों से रसोई व स्नानघर का गंदा पानी मिल रहा है और इसी से निचले क्षेत्रों में किसान अपनी फसलों की सिंचाई कर रहे हैं। इसके बाद यही गंदे पानी के नाले आगे जाकर बड़ी खड्ड व नदियों में मिलते हैं, जहां से पानी को उठाकर लोगों के घर-द्वार तक पहुंचाया जा रहा है। कमोवेश हिमाचल में शहर-कस्बों के नजदीक से गुजरने वाली उपनदियों एवं नदियों की यही स्थिति है। अतएव सरकार को इस ओर अवश्य ध्यान देना होगा और लागों को भी जागरूक हो इनकी निर्मला बनाए रखने हेतु प्रयासरत होना पड़ेगा। ✠

बिना पिए भी तारता है जल

जल के कुछ ऐसे उपयोग भी हैं जिनकी कोई तार्किक संगति तो नहीं दिखती, लेकिन उनका महत्व है। कुछ उपयोग उपचार इस तरह हैं।

1 तर्पण- भारतीय धर्म में यज्ञ, अनुष्ठान, पूजन और पितृपक्ष में 'तर्पण' अनिवार्य माना जाता है। यह तर्पण उन शक्तियों के लिए है जो जीवन और जगत को प्रभावित करती हैं।

2 आचमन- कोई शुभ कार्य खास तौर पर पूजा पाठ, देव दर्शन, यज्ञ संस्कार आदि के समय तीन बार अंजुलि भर मुंह में डाला जाता है। हर बार विष्णु या वैदिक पदों का स्मरण करते हुए नमन किया जाता है।

3 पवित्रीकरण- मंत्र पढ़कर सिर पर जल छिड़का जाता है। समझा जाता है कि पूरा शरीर तथा अंत: करण पवित्र हो गया है।

4 संकल्प- हाथ में जल, फूल की पंखुडियां और चावल ले कर देश, द्वीप, नगर गांव, वर्ष, माह, तिथि, वार, और प्रहर के साथ अपने नाम, पिता के नाम, गोत्र, वर्ण आदि का उच्चारण करते हुए शुरू किए जा रहे काम की मन

ही मन घोषणा की जाती है।

5 अघमर्षण- सुबह शाम की जाने वाली नियमित उपासना, संध्या वंदन आदि के समय जल हाथ में लेकर नासिका के पास ले जाते हैं। नियत मंत्र पढ़ कर सांस लेने के बाद प्रश्वास छोड़ते हैं और वह जल पीठ के पीछे फेंक देते हैं। समझा जाता है कि इस तरह अब तक हुए छोटे मोटे दोष निकल गए।

6 अर्घ्यदान- सुबह सायं सूरज को जल चढ़ाने की प्रक्रिया सूर्य की अराधना के लिए श्रेष्ठ समझी जाती है।

7 जल प्रसेचन- किसी जगह को पवित्र कामों के लिए उपयुक्त बनाने के उद्देश्य से थोड़ा जल छोड़ा जाता है।

8 अभिषेक- देवताओं की आराधना के समय उनकी प्रतिमा पर जल चढ़ाने की प्रक्रिया है। भगवान शिव का जल अभिषेक सबसे ज्यादा प्रचलित और प्रसिद्ध है। ✠

साभार: सव्यसाची

बहुत उपयोगी है वर्षा जल संग्रहण संयंत्र

वर्षा जल को भूजल में पहुंचाने वाला संयंत्र बहुत ही सरल है व आसानी से किसी भी घर में लगाया जा सकता है, वह भी बिना किसी तोड़-फोड़ के। छत के पानी को एक पाईप में संगृहीत करके फिल्टर के माध्यम से घरों में स्थित ट्यूबवैल या टैंक में डाला जाता है। अगर छत से पानी निकालने के तीन निकास (नाले) हैं तो उन सबको जोड़ कर एक पाईप में संगृहीत किया जाता है। फिर उसको फिल्टर से जोड़ा जाता है और फिल्टर के आगे पाईप लगाकर उसे ट्यूबवैल/हैण्डपम्प/कुओं से जोड़ा जाता है। एक गणना के अनुसार यदि 1000 वर्ग फीट की छत पर 1 सेन्टी मीटर वर्षा होती है, तो लगभग 1000 लीटर पानी एकत्रित होता है। वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने से पहले छत की सफाई कर लें ताकि धूल मिट्टी कम से कम जावे। पहली वर्षा आने पर चैक वाल्व से बाहर निकलने वाले पानी को देख लें अगर पानी साफ आ रहा है तो चैक वाल्व को बंद कर देवें। अब यह पानी फिल्टर के माध्यम से और अधिक साफ होकर भूजल (ट्यूबवैल) में चला जाएगा।

इससे होने वाले लाभ:- भूमि में शुद्ध जल जाएगा, भू-जल की मात्रा निश्चित रूप से बढ़ेगी, भू-जल की गुणवत्ता बढ़ेगी। गली, मोहल्ले के नाले वर्षा में बंद नहीं होंगे व घरों में पानी भरने जैसी स्थिति नहीं होगी। भू-जल स्तर बना रहने से ट्यूबवैलों/हैंडपम्प में बराबर शुद्ध जल आता रहेगा। वर्षा ऋतु प्रारम्भ है, अभी से इस 'वर्षा जल संग्रहण संयंत्र' को लगाएं जिससे एक बूंद पानी भी व्यर्थ नहीं जाए और भविष्य में जल की कमी न रहे। ✠

साभार: पथिक संदेश

बणी में सम्पन्न हुआ संघ शिक्षा वर्ग – प्रथम वर्ष

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिमाचल प्रान्त का इस वर्ष का संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष सामान्य हमीरपुर जिले के बणी में स्थित एम. आई. टी. में 26 जून दोपहर को प्रारम्भ होकर 17 जुलाई प्रातः दीक्षान्त के पश्चात् सम्पन्न हुआ। इस बीस दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग में हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली व गुजरात से आए हुए 302 शिक्षार्थियों ने अपनी सहभागिता दिखाई। समापन समारोह के अवसर पर शिक्षार्थी स्वयंसेवकों ने शारीरिक प्रदर्शन किया, जिसमें निःयुद्ध अर्थात् कराटे, दंड-युद्ध, योगासन, खेल तथा घोश प्रमुख आकर्षण के विषय रहे। कार्यक्रम में स्वयंसेवकों के द्वारा पथ-संचलन भी किया गया, जिसमें प्रत्येक स्वयंसेवक कदम से कदम मिला कर चला। इसके पश्चात् देश-भक्ति गीत भी गाया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री अनिल ओक, अखिल भारतीय सह- व्यवस्था प्रमुख ने अपने सम्बोधन में कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है जो सम्पूर्ण राष्ट्र का चिंतन कराता है। संघ को समझना है तो संघ के अन्दर आकर, शिक्षण प्राप्त कर समझा जा सकता है न कि अपनी खुद की धारणा के आधार पर। देश को क्रमांक एक का राष्ट्र बनाने के क्रम में प्रत्येक व्यक्ति को प्रामाणिक, अनुशासित और

सात्विक होना पड़ेगा। जहां अपने देश की संस्कृति हमें आपस में भाई-चारा व मातृभूमि के प्रति लेने का नहीं कुछ देने का समर्पण का संदेश देती है वहीं संघ की एक घंटे की शाखा में चरित्र की महत्ता पर बल दिया जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री के.सी.कंवर सेवानिवृत्त डी.जी.एम., बैंक ऑफ इण्डिया ने की, वहीं वर्ग के माननीय वर्गाधिकारी श्री प्रीतम सिंह ढटवालिया सेवानिवृत्त शिक्षा उपनिदेशक ने भी अपने अनुभव स्वयंसेवकों व आए हुए अतिथियों से साझा किये। उन्होंने कहा कि बीस दिन का प्रशिक्षण वास्तव में कठोर साधना का समय है। मैं संघ की कार्यपद्धति व अनुशासन से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। अध्यक्षीय भाषण में श्री के.सी.कंवर ने कहा कि आप सब भाग्यशाली हैं जो आपको राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का शिक्षण प्राप्त करने का अवसर मिला। ✠

सिन्धु-दर्शन उत्सव

19वां सिन्धु-दर्शन उत्सव 'बेटी बचाओ, कल बचाओ' के संदेश के साथ सम्पन्न हुआ। चार दिवसीय सिन्धु-दर्शन उत्सव 23 जून से 26 जून तक लेह में सिन्धु के तट पर मनाया गया, जिसमें देश भर से एक हजार से अधिक यात्रियों ने भाग लिया। यूएसए व सउदी अरब से भी यात्री शामिल थे। 23 जून को सरस्वती विद्या निकेतन व सिन्धु भवन लेह के प्रांगण में यात्रियों के स्वागत के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें यात्रियों के साथ ही काफी संख्या में स्थानीय लोग भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के दौरान उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र पटियाला के कलाकारों व स्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। सिंधु-दर्शन यात्रा के संरक्षक व मार्गदर्शक श्री इन्द्रेश कुमार जी ने 'बेटी बचाओ कल बचाओ' का नारा देते हुए भ्रूण हत्या नहीं होने देंगे, बेटी का सम्मान करेंगे, बेटी पर अत्याचार नहीं होने देंगे, दहेज नहीं लेंगे, अंतिम संस्कार बेटी के हाथों करवाएंगे, इस प्रकार का संकल्प लेने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा कि सिंधु-दर्शन यात्रा केवल पर्यटन नहीं बल्कि देशवासियों को एकता के सूत्र में बांधने का उत्सव है। 24 जून को सुबह सिंधु पूजन के साथ ही सिंधु दर्शन उत्सव का विधिवत् शुभारंभ हुआ। पहले बहराणा पूजन

हवन तथा बौद्ध परंपरा के अनुसार विधिवत पूजा की गई, कार्यक्रम की अध्यक्षता केंद्रीय गृह राज्य मंत्री किरण रिजिजू ने की। ऑल लद्दाख गोम्पा एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष महामहिम तोकदन रिनपोछे मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। इनके अलावा जम्मू कश्मीर विधानसभा के अध्यक्ष श्री कवीन्द्र गुप्ता, जम्मू कश्मीर के उपमुख्यमंत्री डॉ. निर्मल सिंह, हरियाणा के शिक्षा मंत्री श्री रामविलास शर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे। उत्सव के स्वागताध्यक्ष व लेह के सांसद श्री थुम्पस्न छेवांग ने उत्सव के दौरान उपस्थित समस्त गणमान्यजनों यात्रा में भाग लेने वाले यात्रियों सहित उपस्थित स्थानीय निवासियों का स्वागत किया। पूजन के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया तथा राष्ट्रगान हुआ। केंद्रीय गृह राज्यमंत्री श्री किरण रिजिजू ने कहा कि यह सिन्धु-दर्शन उत्सव राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है भारत सरकार उत्सव के आयोजन में हर संभव सहयोग प्रदान करेगी। इस अवसर पर श्री इंद्रेश कुमार ने कहा कि अगले वर्ष सिन्धु दर्शन का यह उत्सव अंतर्राष्ट्रीय स्तर का होगा। 25 जून सायं को लेह के पोलो मैदान में विदाई समारोह का आयोजन किया गया। यात्रा में भाग लेने पहुंचे समस्त यात्रियों का आभार व्यक्त कर विदाई दी गई। सिन्धु-दर्शन तीर्थ यात्रा के नाम से विश्व विख्यात सिन्धु-दर्शन तीर्थ और कोई नहीं, वहीं प्राचीन और पवित्र सिन्धु नदी है, जिसके तट पर वैदिक संस्कृति पल्लवित हुई थी, जिस नदी ने हमारे देश को नाम दिया, हमें हमारी सांस्कृतिक पहचान दी। ✠

सांस्कृतिक प्रदूषण रोकने की शुरूआत हो अपने घर से- डॉ. महेंद्र

बद्दी में संघ का सात दिवसीय शिविर सम्पन्न

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा बद्दी में आयोजित सात दिवसीय प्राथमिक शिक्षा वर्ग का विधिवत समापन हो गया। विभाग संघ चालक डॉ. महेन्द्र कुमार ने स्वयंसेवकों को संघ की स्थापना, उद्देश्य व कार्यप्रणाली से अवगत करवाया। डॉ. महेन्द्र कुमार, विभाग संघचालक, सोलन ने अपने संबोधन में कहा कि संघ का मकसद समाज के हर वर्ग में चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करना है। मौजूदा समय में पैसे कमाने की होड़ में हमारे संस्कार गौण हो रहे हैं। हमारी भाषा, वेशभूषा दिन व दिन बदलती जा रही है। उन्होंने कहा कि देश में हो रहे संस्कृतिक प्रदूषण को रोकने के लिए हमें सबसे पहले अपने घर से शुरूआत करनी होगी। विभाग संघ चालक ने कहा कि पश्चिमी सभ्यता भारत पर हावी हो रही है, जिसके चलते हमारी संस्कृति व सामाजिक सरोकार भी समाप्त हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि अनुशासन का मतलब स्वयं को अनुशासित करना है ओर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अपने स्वयं सेवकों को अनुशासित रहने, समाज सेवा एवं देशभक्ति का पाठ पढ़ाता है। शिविर में बद्दी, झाड़माजरी, कालुझंडा, कुडांवाला, सनेड, खेडा, नंदपुर, लोदीमाजरा, दबट, बस्सी, स्वारघाट, बरोटीवाला नालागढ़ व नयनादेवी क्षेत्र के तीन दर्जन से अधिक स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण लिया।

हिमाचल निर्माता डॉ. यशवंत सिंह परमार

भला कौन हिमाचली ऐसा होगा जो हिमाचल के प्रथम मुख्यमंत्री हिमाचल निर्माता डॉ. यशवंत सिंह परमार के नाम से परिचित न हो। वस्तुत: डॉ. परमार एवं हिमाचल प्रदेश पर्यायवाची से बन गए हैं। हों भी क्यों न?हिमाचल गठन, विशाल हिमाचल, पूर्ण राज्यत्व प्राप्ति एवं प्रदेश के चहुंमुखी विकास में डॉ. परमार ने जो आयोग स्थापित किए हैं, उन्हें झुठलाया एवं भुलाया नहीं जा सकता। सिरमौर रियासत के चन्हालग गांव में 4 अगस्त सन् 1906 को जन्मे बालक यशवंत ने अपने जीवन में यशस्वी कार्य करके अपने नाम को सार्थकता प्रदान की। स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विधि स्नातक जैसी उपाधियां प्राप्त करके सन् 1944 में लखनऊ विश्वविद्यालय से पीएचडी जैसी प्रतिष्ठित उपाधि प्राप्त कर तत्कालीन अशिक्षित समाज में एक आदर्श स्थापित किया। सिरमौर रियासत में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के रूप में कार्य करने के पश्चात् सिरमौर एसोसिएशन दिल्ली के सचिव, हिमाचल हिल स्टेट कौंसिल के प्रधान, ग्रुपिंग और एकीकरण समिति ऑल इंडिया पीपल्स कान्फ्रेंस के सदस्य जैसे पदों पर कार्य करते रहे। 15अप्रैल, सन् 1948 को हिमाचल प्रदेश एक केंद्र शासित प्रदेश के रूप में भारत के मानचित्र पर उभरा। तब इस प्रदेश को एक दूरदर्शी तथा राजनीतिक सूझ-बूझ वाले नेता तथा कुशल प्रशासक की आवश्यकता महसूस हुई। हिमाचल के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी वैद्य सूरत सिंह ने परमार की प्रतिभा को पहचानते हुए लोगों की भावनाओं को नजरअंदाज कर (पच्छाद की जनता वैद्य जी को विधायक बनाना चाहती थी) स्वयं चुनाव न लड़कर सन् 1952 में हुए प्रथम विधानसभा चुनाव में पच्छाद से डॉ. परमार को विजयी बनवाया। विजयी होने तथा प्रथम मुख्यमंत्री बनने के पश्चात् डॉ. परमार ने अपनी योग्यता, कर्मठता व कार्य कुशलता से हिमाचल को विशाल आकार एवं पूर्ण राज्यत्व दिलाने के साथ शिक्षा, कृषि, बागबानी, यातायात, स्वास्थ्य जैसे समस्त क्षेत्रों में हिमाचल को विकसित कर एक आदर्श राज्य की नींव डाली। वर्तमान हिमाचल उसी पक्की नींव पर बना भव्य प्रसाद है जो अनेक क्षेत्रों में आदर्श राज्य माना जाने लगा है। डॉ. परमार एक दूरदर्शी राजनेता, कुशल प्रशासक तो थे ही इसके साथ मनसा-वाचा-कर्मणा पूर्णतया हिमाचली किवा ठेठ पहाड़ी थे। उनका राजनैतिक अभियान तो एक सुगठित, सांस्कृतिक विशाल हिमाचल की कल्पना को साकार करने का केवल मात्र एक साधन था। वस्तुत: लोक संस्कृति डॉ. परमार के रोम-रोम में रची बसी थी। शहरों में पहाड़ी लोगों का शोषण होते देख उन्होंने सर्वप्रथम स्वयं को सगर्व पहाड़ी घोषित करवाया। पहाड़ी पहरावे के पक्षधर परमार ने लम्बी कमीज व चूड़ीदार पाजामे पर 'लोइया' पहनकर लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित कर इसे शान का परिचायक बनाया। उन्हीं के अनुकरण पर सभी लोग 'लोइया' पहनने में हीनता के विपरीत गौरव अनुभव करने लगे हैं। पहाड़ी भाषा पर आज जो बहस छिड़ी है उसके समर्थन में डॉ. परमार का विचार था कि गांव और पिछड़े लोगों को यदि कोई बात समझनी है तो उनसे उनकी भाषा में बात करनी होगी। वे पहाड़ी भाषा के समर्थन में कहा करते थे कि पहाड़ी भाषा का हिन्दी से कोई टकराव नहीं बल्कि असलीयत तो यह है कि देवनागरी लिपि में प्रकाशित हो रहा पहाड़ी भाषा का साहित्य राष्ट्रभाषा हिन्दी को मजबूत करेगा तथा पहाड़ी भाषा तथा लोक संस्कृति के समग्र पहलुओं के संरक्षणार्थ उन्होंने हिमाचल कला संस्कृति व भाषा अकादमी की स्थापना की जो इस उद्देश्य की ओर सतत् प्रयत्नशील है। कला संस्कृति व भाषा अकादमी तथा पहाड़ी कलाकार संघ-हाब्बन (सिरमौर) द्वारा 9 से 16 जनवरी सन् 1977 तक राजगढ़ में आयोजित 'लोक नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला' के उद्घाटन अवसर पर प्रकट किए गए डॉ. परमार के विचार उनकी लोक

शेष पृष्ठ 19 पर.....

शिरगुल के दरबार में सता रहा पानी

शिरगुल महाराज के प्रति शिमला, सोलन व सिरमौर के लोगों की आस्था के केंद्र चूड़धार में आजकल हर रोज चोटी पर हजारों श्रद्धालु पहुंचते हैं। चोटी पर पहुंचने के लिए नौहराधार से 16 किलोमीटर पैदल सफर तय करना होता है जबकि चौपाल उपमंडल के सराहं से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी है। चोटी पर पहुंचने के लिए श्रद्धालु हरिपुरधार से कुपवी के बीच सराहं मार्ग का भी इस्तेमाल करते हैं। बलग-पुलवाहल मार्ग से भी चूढ़धार पहुंचा जा सकता है। करीब 11 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित चूड़धार चोटी पर आराध्य देव शिरगुल महाराज के प्राचीन मंदिर में पहुंच रहे श्रद्धालुओं को पानी के संकट का सामना करना पड़ रहा है। करीब एक से दो हजार श्रद्धालु प्रतिदिन चोटी पर पहुंच रहे हैं। पानी की किल्लत होने के कारण गंदगी भी फैल रही है। खुले में ही श्रद्धालुओं को शौच जाने को विवश होना पड़ रहा है। इससे चोटी पर पर्यावरण भी दूषित होने लगा है। शिमला जिला की कुपवी उप तहसील के समीप सरहां से चोटी पर उठाऊ योजना के तहत पानी पहुंचाया गया था। इस साल यात्रा शुरू होने से पहले इस योजना के तहत पानी पहुंचाया गया था। इस साल यात्रा शुरू होने से पहले इस योजना को बहाल नहीं किया जा सका है। चोटी पर दो प्राकृतिक स्त्रोत हैं। कहा जाता है कि शिरगुल महाराज ने इस उच्च शिखर पर अपनी दैविक शक्ति से जल उत्पन्न किया। आज भी शिवलिंग के बांई ओर दो जल की बावड़ियां हैं। इस पवित्र जल के दो कुण्ड भी हैं। श्रद्धालु इस पवित्र जल से अपने सिर को अभिसिंचित करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस जल सिंचन तथा शिवलिंग के दर्शन से सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इसी जल पर रोजाना आने वाले हजारों श्रद्धालुओं के लिए व्यवस्था का दारोमदार रहता है। श्रद्धालुओं ने बताया कि प्रतिदिन यात्रियों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो रही है लेकिन पानी न होने के कारण काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। पिछले शनिवार वे यात्रा पर चोटी पर गए थे। उस दिन लगभग तीन हजार श्रद्धालु पहुंचे थे जिनके रहने की उचित व्यवस्था तो है लेकिन पानी

उपलब्ध नहीं है। वहीं, चौपाल के एसडीएम ने बताया कि 12 शौचालयों का निर्माण शुरू हो गया है। इन पर छत डाल दी गई है लेकिन इनकी चारदीवारी लगनी बाकी है। इसके लिए कुछ दिन पूर्व उपायुक्त शिमला द्वारा चूड़ाधार सेवा समिति व प्रशासन के साथ बैठक की गई थी। उस दौरान प्रशासन ने चूड़धार सेवा समिति को पांच लाख रूपए की मंजूरी देते हुए शौचालय के बचे कार्य को शीघ्र पूरा करने के आदेश दिए हैं। पिछली बार भारी बर्फबारी के कारण सराहं से चूड़धार उठाऊ पेयजल योजना क्षतिग्रस्त हो गई थी जिसे अब दुरूस्त कर दिया गया है। ✠

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr. Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr. Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

के लिए मोबाईल पर सम्पर्क करें

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:

Regular Clinic:
C/o K.K. Sharma Vivek Nagar
Pingah Road, Una (H.P.)

पाक के बाबा रामदेवः योगी शमशाद हैदर
धीरे धीरे ही सही पाकिस्तान के लोगों के दिलों में उतर रहा है योग

योगी हैदर कहते हैं कि जैसे बाबा रामदेव योग को भारत में घर-घर पहुंचा रहे हैं, उसी तरह से मैं पाकिस्तान में योग को घर-घर पहुंचाना चाहता हूं। जब उनसे कहा गया कि क्या आपको पाकिस्तान का बाबा रामदेव कहा जा सकता है, तो वे हंस कर बोले, नहीं आप मुझे बाबा शामदेव कहें। शमशाद हैदर बताते हैं कि धीरे-धीरे ही सही, लेकिन अब योग पाकिस्तान के लोगों के दिलों में उतर रहा है। लगभग आठ साल पहले लाहौर के एक डॉक्टर उनके पहले स्टूडेंट बने थे। इसके बाद थोड़े बहुत विरोध के बावजूद उनके स्टूडेंट की संख्या बढ़ कर हजारों में पहुंच गई है। योग से सैकड़ों लोगों का मोटापा घट गया है। बीमारियां दूर हो गई हैं और वे सेहतमंद जिंदगी जीने लगे हैं। योगी कहते हैं कि जब मैं योग का विरोध करने वालों को इसकी खूबियां और फायदे बताता हूं तो वे मेरी बातों को ध्यान से सुनने लगते हैं फिर इनमें से ही कई लोग योग सीखने की ख्वाहिश करते हैं।✠

गौ सेवा-विभाग बनाएगा 120 कामधेनु नगर, खोलेगा गोकुल गुरूकुल

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अगले कुछ महीनों में देशभर में 120 कामधेनु नगर बनाना चाहता है। उसका मानना है कि इससे हिंदू परंपरा में पवित्र माने जाने वाले पशुओं का सम्मान होगा और उनके साथ लोगों का रिश्ता मजबूत होगा। विभाग को उम्मीद है कि इससे अपराध में कमी आएगी और अपराधियों को सुधारा जा सकेगा। कामधेनु नगर में दरअसल गौशालाएं होंगी, जिन्हें आवासीय कालोनियों के पास बनाया जाएगा। संघ के अखिल भारतीय गौ सेवा के प्रमुख श्री शंकरलाल ने कहा, गायों की रक्षा तभी की जा सकती है, जब वे रोजमर्रा के जीवन का हिस्सा बन जाएं। इन गौशालाओं से कालोनियों को दूध, दवाएं और गोबर गैस मिलेगी।

बदले में कालोनियां इन गोशालाओं की देखभाल में मदद करेंगी। संघ ने पं. बंगाल, राजस्थान, गुजरात और मध्य प्रदेश में 100 से ज्यादा जगहें चिन्हित की हैं। श्री शंकरलाल ने कहा, इन गोशालाओं में विशुद्ध भारतीय नस्ल की गाएं रखी जाएंगी। उन्होंने कहा, अपराध मुक्त भारत के लिए जरूरी है कि हमारे बच्चे भारतीय गायों का ही दूध पिएं क्योंकि इससे वे सात्विक बनेंगे। विभाग की इस साल बड़े आवासीय स्कूलों में 80 गोकुल गुरूकुल खोलने की योजना भी है। बानकेड़ी

और ग्वालियर में ऐसे स्कूल पहले से हैं। इसके तहत गोधन पर आधारित खेती को बढ़ावा देने, जेलों में गोशालाएं बनाने, स्कूली बच्चों को छात्रवृत्ति देने के लिए गायों के बारे में परीक्षा कराने, गौ-विज्ञान के अध्ययन के लिए एक विश्वविद्यालय खोलने, हर राज्य में एक गाय अभ्यारण्य खोलने और मंदिरों में हर सप्ताह गौकथा कराने की बातें हैं।

जेलों में गौशालाओं के बारे में श्री शंकरलाल ने कहा, गायों की सेवा करने से कैदियों के व्यवहार में बदलाव आएगा। मध्य प्रदेश में इसमें सफलता मिली है। विभाग की योजना ऐसा ट्रैक्टर बनाने की भी है, जिसे बैलों से खींचा जा सकेगा। इस तरह किसानों को पशु आधारित खेती की व्यवस्था की ओर लौटाया जा सकेगा।✠

शिविर में 50 मधुमेह रोगियों ने किया योग

जिला मुख्यालय चंबा स्थित आर्य समाज मंदिर हॉल में 22 से 28 जून तक मधुमेह मुक्त भारत अभियान के तहत शिविर लगाया गया। इस अभियान का संचालन आरोग्य भारती व विश्वविद्यालय बैंगलुरू की ओर से किया गया। मधुमेह मुक्त भारत अभियान के जिला संयोजन किशोरी लाल ने बताया कि शिविर में 50 मधुमेह रोगियों का चयन किया गया। उन्हें इस रोग से मुक्ति दिलाने के लिए हर दिन योग करवाया गया। इस दौरान एसआरएल सलैब चंबा ने रोगियों को सौ रूपए शुल्क पर रक्त जांच तथा भारोतोलन किया। आयुर्वैदिक चिकित्सक केशव वर्मा ने सात दिन तक रोगियों का स्वास्थ्य जांचा। रोगियों को रोज कुशल योग प्रशिक्षकों अनिल व मुकेश की देखरेख में योग करवाया गया। किशोरी लाल ने बताया कि शिविर के दौरान योग से मधुमेह रोगियों को काफी लाभ मिला। उनके भार एवं रक्तचाप में एक स्थायी पन पाया गया। अभियान के तहत रोगियों को मधुमेह मुक्त योग की डीवीडी भी प्रदान की गई। उन्हें तीन माह तक योगाभ्यास करने की

सलाह दी गई। पंजीकृत रोगी हर रविवार को आर्य समाज मंदिर में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाएंगे। किशोरी लाल ने बताया कि मधुमेह सहित अन्य बीमारियों को नियमित योगाभ्यास से दूर किया जा सकता है। शिविर के दौरान मधुमेह रोगियों के स्वास्थ्य में पहले की तुलना काफी सुधार हुआ है। इसीलिए उन्हें हर दिन नियमित योग करने की सलाह दी गई है। कार्यक्रम में जिला संयोजक सहित सह संयोजक शिव दयाल शर्मा, अभिमन्यु ठाकुर, संदीप कुमार सहित अन्य सदस्यों ने भी सेवाएं प्रदान की। ✠

व्हाट्स ग्रुप बनाएं संभलकर

सोशल साइट् फेसबुक, हाइक, व्हाट्सअप पर ग्रुप बनाना और उसमें लोगों को जोड़कर उनके विचारों को शेयर करना अब खतरे से खाली नहीं है। इन ग्रुपों में होने वाली वार्तालाप और विचारों के आदान-प्रदान पर साइबर क्राईम ब्रांच गंभीरता से लेते हुए ग्रुप बनाने वालों और आपत्तिजनक विचार प्रस्तुत करने वालों के खिलाफ सख्त कार्यवाही करने लगी है। हाल ही में पुणे में एक एडमिन को इसी तरह के एक मामले में एक साल की जेल हुई है। मामला किसी ग्रुप में राजनैतिक लोगों के फोटो शेयर करने से जुड़ा था। गौरतलब है कि इससे पहले राजधानी भोपाल में भी बच्चा चोरी को लेकर अफवाहें फैलाने के मामले में एक व्यक्ति पर देशद्रोह का मामला दर्ज किया गया है। इसी तरह

के एक मामले में एक पार्षद सहित कई लोगों पर भी मामले दर्ज हुए हैं।

रखें यह सावधानी

आप के द्वारा बनाए गए ग्रुप को या तो डिलीट करें या सदस्य को चेतावनी दें। किसी भी प्रकार के धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, व्यवस्था को आहत करने वाले को क्लिक या शेयर न करें अपने मित्रों व सगे सम्बन्धियों को भी इसकी जानकारी साझा करें। अन्यथा गंभीर परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहें।✠

उत्तर 1. अंगद, 2. हरिद्वार एक्सप्रेस, 3. स्वाति मालीवाल, 4. श्याम नारायण, 5. 5, 6. राष्ट्रीय ध्वज, 7. मण्डी, 8. नेरी, हमीरपुर, 9. 1, 10. पालमपुर।

एक और ऋषि का अवसान,

वरिष्ठ प्रचारक मा. सोहन सिंह जी का निधन

राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, जम्मू-कश्मीर के प्रचारक रहे माननीय सोहन सिंह का गत 4 जुलाई, 2015 को 93 वर्ष की आयु में केशवकुंज झंडेवाला, दिल्ली में रात्रि 11.40 बजे स्वर्गवास हो गया।

राजस्थान में करीब 20 साल तक एक तपी जीवन जीने वाले सोहन सिंह को प्रदेश में संघ कार्य को द्रुत गति से विस्तार देने वाले योद्धा प्रचारक के रूप में जाना जाता है। जब ये राजस्थान आए थे तब यहां मात्र 500 शाखाएं थीं।

उन्होंने प्राण-प्रण प्रयास करके उसे दुगुना कर दिया। हर जिले, हर तहसील और कस्बे में उन्होंने समर्थ और सक्षम कार्यकर्ताओं की टोली तैयार की। वे कठोर जीवन जीने वाले कार्यकर्ता हैं। न्यून से न्यूनतम आवश्यकताओं में अपना जीवन बसर किया। राजस्थान में सन् 1972 में आए और वर्ष 1987 तक यहां रहे। उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी कि उन्होंने दायित्व का सफल निर्वहन करने वाले स्वयंसेवकों का चयन कर उन्हें काम करने के लिए नियुक्त किया।

अपनी बात सहज, लेकिन प्रभावी तरीक से कहते थे। उनका कहना था कि भारत गांवों का देश है, गांवों से ही राष्ट्रीयता मजबूत होगी। हर गांव में संगठित हिन्दू शक्ति खडी हो, इसी को ध्यान में रखकर काम बढ़ाना होगा।

सोहन सिंह यानी 'व्यवस्था' और अनुशासन के पर्याय। वर्ष 1985 में पाथेयकण प्रारंभ हुआ। उसे गांव-गांव तक पहुंचाने की योजना उन्होंने ही बनाई। आज पाथेयकण की प्रसार संख्या 1लाख 50 हजार है। उ.प्र. के जिला बुलंदशहर के हर्चना गांव में सन् 1923 की विजयादशमी के दिन सोहन सिंह का जन्म हुआ। छः बहन-भाइयों में सबसे छोटे थे।

1942 में बी.एस.सी. की अन्तिम वर्ष की परीक्षा उन्होंने दी, लेकिन एक आन्दोलन में विश्वविद्यालय का रिकार्ड जल जाने की वजह से परिणाम घोषित नहीं हो पाया। छात्र रहते हुए ही वे संघ के सम्पर्क में आ गए । अध्ययन पूर्ण करने के पश्चात आपकी नौसेना में अधिकारी के रूप में नियुक्ति हो गयी थी। लेकिन देश को स्वतंत्र कराने के उद्देश्य से आजीवन संघ के लिए कार्य करने का प्रण किया और प्रचारक हो गए। व्यवस्था तथा कठोर अनुशासन के पर्याय तपस्वी स्व. सोहन सिंह जी को मातृवंदना संस्थान की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।✠

TEST NAME	B V P LAB RATE	DDU LAB RATE	IGMC RATE	OTHER PVT. LAB
URINE R/E M/E	20/-	15/-	25/-	50/-
STOOL M/E	20/-	10/-	10/-	50/-
SEMEN ANALYSIS	30/-	20/-	15/-	150/-
KETONE BODIES	10/-	10/-	10/-	40/-
F B S	20/-	15/-	15/-	40/-
UREA	20/-	25/-	15/-	40/-
URIC ACID	20/-	20/-	25/-	40/-
CREATNINE	20/-	25/-	25/-	40/-
ELECTROLYTES	100/-	NA	70/-	250/-
LIPID PROFILE	150/-	120/-	150/-	300/-
T F T	300/-	NA	300/-	450/-
T S H	100/-	NA	150/-	200/-
SGOT	30/-	25/-	15/-	50/-
SGPT	30/-	25/-	15/-	50/-
ALK PhO4	20/-	30/-	25/-	50/-
PROTEINE	20/-	20/-	15/-	40/-
ALBUMIN	20/-	15/-	15/-	40/-
GTT	100/-	60/-	50/-	200/-
24 hrs Urine Proteine	50/-	15/-	50/-	200/-
PT INR	50/-	NA	50/-	150/-
BILIRUBIN	20/-	25/-	15/-	50/-
CALCIUM	40/-	NA	25/-	80/-
HbA1C	200/-	NA	200/-	400/-
Micro Albumin Urine	200/-	NA	275/-	400/-
PROLACTINE	200/-	NA	75/-	400/-
L H	200/-	NA	75/-	400/-
F S H	200/-	NA	50/-	400/-
CHOLESTEROL	30/-	25/-	25/-	50/-
A N A	200/-	NA	100/-	400/-
PREGNANCY TEST	20/-	NA	30/-	50/-
S T S	30/-	NA	30/-	100/-
WIDAL	40/-	30/-	60/-	100/-
A S O	60/-	60/-	60/-	150/-
C R P	60/-	30/-	30/-	100/-
HBsAg	50/-	80/-	60/-	100/-
BLOOD GROUPING	20/-	NA	10/-	50/-
PHOSPHOURS	40/-	NA	25/-	100/-
Urine C/S	80/-	NA	100/-	150/-
Gram Stain	50/-	NA	30/-	150/-
RFT	60/-	50/-	50/-	100/-
LFT	100/-	75/-	75/-	200/-
R H FACTOR	60/-	30/-	30/-	100/-

कामये दुःख तप्तानाम् ।
प्राणिनाम् आर्तनाशनम् ।।
Pray an end to the sufferings of all

BVP CLINICAL LAB
RED CROSS BHAWAN, NEAR DDU HOSPITAL
SHIMLA
NOW WITH LATEST EQUIPMENTS

CONTACT NO. : 2655906 RED CROSS BHAWAN
2628329 KNH LAB
bvpclinicallab2000@gmail.com

BVP is a voluntary NGO working in the field of various kind of social service projects. BVP LAB was started in Dec. 1999 with a quest to serve.

✓BEST ✓LATEST ✓FASTEST

- Patients from far off areas had to suffer because of delay of results:

BVP OFFERS YOU SAME DAY REPORT OF ALL TESTS

- The lab runs on no profit no loss basis
- Reimbursement to all govt. employees
- Facility free for poor patients
- Sunday & Holidays open 10.00 am to 1.00 pm
- Home sample collection facility available
- Rates even less than RKS
- Rates inclusive of cost of syringes wherever required.
- State of art machinery with latest equipment and absolute accuracy
- Highly qualified, competent and courteous staff under supervision of Dr. Asha Goyal (Retd. Director Medical Education H.P.)
- We have served more than 5 lac patients so far.

ELISA READER
CENTAUR ADVIA
bvpclinicallab2000@gmail.com

DIMENSIONS THE FULLY AUTOMATED BIOCHEMISTRY

IMMULITE 1000 IMMUNOASSAY SYSTEM
Reliability that keeps your lab running

Allergy	Reproductive Endocrinology
Microalbumin	3rd Generation TSH
HBsAg	Total T3
	Total T4
Oncology	ToRCH
AFP	CMV IgM
PSA	CMV IgG
	Herpes I & 2 IgG
	Rubella IgM
	Rubella Quantitative IgG
	Toxoplasma Quantitative IgG

TEST NAME	B V P LAB RATE	DDU LAB RATE	IGMC RATE	OTHER PVT. LABS
Hb	10/-	10/-	5/-	50/-
TLC	10/-	10/-	10/-	40/-
DLC	10/-	10/-	10/-	40/-
ESR	10/-	10/-	10/-	40/-
CHG	40/-	40/-	30/-	200/-
PCV	10/-	NA	10/-	40/-
RBC COUNT	10/-	NA	10/-	40/-
P.COUNT	10/-	10/-	10/-	50/-
PERIPHEAL SMEAR	30/-	20/-	20/-	250/-
Reticulocye COUNT	10/-	NA	10/-	40/-
LE CELL	50/-	NA	10/-	100/-
BT CT	10/-	10/-	15/-	40/-

COMPARATIVE RATES

सम्पर्क सहयोग संस्कार सेवा समर्पण

भारत विकास परिषद, शिमला द्वारा संचालित
BVP CLINICAL TESTING LAB

(Regd. Under society registration act 1860)
102- 103, Red Cross Sarai, DDU (Ripon) Complex, Shimla Tel.: 2655906
Civil Supply Shop, Ground Floor KNH (Lady Reading) Phone : 2628329

COMPLETE HEALTH PANEL

FBS FASTING BLOOD SUGAR

CHG (Heamoglobin,TLC, DLC,P.COUNT,ESR

LIVER FUNCTION TEST

BILURUBIN Total &Conjugated ,
SGOT,SGPT ,Alkaline Phosphates,Total Protein, albumin ,

RFT : UREA ,URIC ,CREATININE

LIPID PROFIL : Cholesterol , Triglycerides ,HDL cholesterol

,LDL cholesterol .VLDL cholesterol

ALL TEST DONE IN JUST :::: Rs 350 /

WITH THYROID : 600/ ONLY

Dr. (Mrs.) ASHA GOEL
Consultant Pathologist
MBBS MD FISCD (Delhi), Director Cum Consultant
Former Dir. Med. Ed. Principal, Prof & Head (IGMC)

Lab Officer Technologist

N.B.: Conditions of Reporting
- This represents only an opinion, if clinical findings of the patient do not correlate with opinion/findings given/inferred in the report then the patient/referring doctor may please contact the lab immediately for re-conformation by repeating the investigation.
- The blood and other samples received from outside will be presumed to be of patients named on the samples.
- The blood samples and fluids for cytology are discarded after conducting the required tests unless otherwise informed earlier by the patient.
- the histopathological samples will be preserved for one month only whereas the wax blocks and glass slides will be discardedafter six months.

देश के कृषकों को अन्ततः क्या मिला - 1

- राजेश बंसल

आज पूरे भारत वर्ष में ग्राम-विकास पर चर्चा होती रहती है तथा प्रत्येक राजनीतिज्ञ व बुद्धिजीवी इस विषय पर लम्बे-लम्बे भाषण देता दिखता है। लेख लिखे जाते हैं, लेकिन सर्वप्रथम हमें यह सोचना पड़ेगा कि आख़िर यह विषय उभर कर आया ही क्यों या ऐसा कहें कि इस विषय पर चर्चा करने की आवश्यकता ही क्यों पड़ी।

वास्तव में जब देश सन् 1947 में स्वतंत्र हुआ। देश की तैंतीस करोड़ आबादी ने पहली बार अपनी अपनी सरकार इस आशा के साथ चुनी कि सम्पूर्ण जनसंख्या के लिये सरकार हर सम्भव प्रयास करे, जिसमें विकास एक बड़ा मुद्दा होता है।

अब अगर हम सोचें तो उस समय 33 करोड़ की आबादी में से 80% जनता कृषि पर आधारित थी। यानि लगभग पच्चीस करोड़ के करीब कृषि के क्षेत्र में कार्यरत थे या यों कहें कि कृषि पर निर्भर थे। दूसरी ओर लगभग आठ करोड़ जनता देश के शहरों में अपना जीवनयापन कर रही थी। अब देखिये कि देश में विकास का पहिया ऐसा घूमा कि सारा विकास शहरों तक सीमित होकर रह गया। लगभग दस से पंद्रह प्रतिशत खेती योग्य भूमि शहरों ने विकास के नाम पर निगल ली। शहरों में जहाँ विकास के लिये विभिन्न योजनायें तथा विभाग बनाये गये, वहीं गांवों को विकास के लिये केवल एक विभाग के एक अधिकारी (खण्ड विकास अधिकारी) के भरोसे छोड़ दिया गया तथा वहां पर भी धन का प्रावधान नाम मात्र ही होता था।

सन् 1960 के आसपास जब भारत की जनसंख्या में स्वाभाविक वृद्धि हुई तथा देश में अन्न का संकट उत्पन्न हुआ तो सरकार का ध्यान कृषि पर गया तथा सरकार ने पूरा ध्यान अनाज उत्पादन बढ़ाने की ओर लगायें, जिसके अंतर्गत गांव में सिंचाई के लिये ट्यूब वैलों का निर्माण, बैलों से खेती की जगह ट्रैक्टरों ने ले लिया, फसल काटने के लिये हारवैस्टरों, विदेशी बीज तथा अंग्रेजी खाद तक का सहारा लिया गया।

इस देश के मेहनती किसानों ने अपनी मेहनत से देश के सम्मुख आई इस विकट समस्या को समाप्त कर दुनिया के सामने एक मिसाल पैदा की तथा दुनिया ने उनका लोहा भी माना। लेकिन देश के कृषकों को अन्ततः मिला क्या?जिस कृषि योग्य भूमि पर उस समय पच्चीस करोड़ किसान खेती कर रहे थे, उससे काफी कम पर आज पच्चहत्तर करोड़ के करीब जनता को निर्भर रहना पड़ रहा है। अतः नतीजा सबके सामने है। लाखों किसान आत्महत्या को मजबूर हो गये हैं या फिर गरीबी का सामना कर रहे हैं।

यह शहरों में ए.सी. कमरों में बैठ कर बनाई गई बड़ी-बड़ी योजनाओं के कारण हुआ। शहरों की जनता साधन सम्पन्न होती चली गई तथा गांव की भोली-भाली जनता साधनों के अभाव में गरीबी की ओर बढ़ती चली गई। अब समय आया है कि देश द्वारा की गई प्रगति का लाभ गांव-गांव तक पहुंचे। जिससे एक ओर तो शहरों पर लगातार बढ़ते आबादी के दबाव को कम किया जा सके तथा साथ ही गांव-गांव तक सुख व समृद्धि की बयार बह सके।

इसके लिये प्रत्येक गांव में विद्यालय, तकनीकी शिक्षा केन्द्र, कम्प्यूटर ट्रेनिंग सैंटर, आंगनबाड़ी केन्द्र, वाचनालय, डिस्पैंसरी, बैंक शाखा, पोस्ट ऑफिस, खेल का मैदान, पंचायतघर, आम शौचालय, पीने के पानी की व्यवस्था, पशुओं के लिये एक तालाब, टयूब वैल, कूहल, स्ट्रीट लाइट, सीवरेज सिस्टम, गौशाला, सामुदायिक केन्द्र तथा एक संस्कार मन्दिर आदि का निर्माण होना चाहिये।

अगर यह सब हो पाया तो ग्रामीण क्षेत्र के अधिकांश युवाओं को अनेक क्षेत्रों में गांवों में ही रोजगार उपलब्ध हो सकेगा तथा साथ ही युवा देश की तरक्की में भी योगदान दे पायेंगे। आवश्यकता है एक हिम्मत से आगे बढ़ने की। मैं मानता हूं कि कोई भी कार्य कठिन तो हो सकता है लेकिन सहजता से हल सम्भव हो सकता है। देशवासी जब किसी कार्य को सिद्ध करने में जुट जाते हैं तो पूरे विश्व में हमारा कोई सानी नहीं हो सकता है।✠

क्रमशः.....

माँ

न समझ पाया, न समझ पाऊं,
तुझपे मां बलिहारी जाऊं,
दुनिया में लाई तू सहन करके पीड़ा,
मां तू उठाती मेरी जिम्मेवारी का बीड़ा।
मुझे पालने के लिए अपना चैन गवांया,
पर ये बता मां, बदले में तूने क्या पाया,
मैं रोता तो तू रोती,
मैं सोता तो तू सोती,
मुस्कुराहट देख कर मेरी,
न जाने कितनी खुशी होती।
चोट लगती मुझे, दर्द तुझे होती,
बिना तेरे जिंदगी लम्बी सजा है,
अतुल्य तू अमूल्य तू,
तेरी मुस्कान के लिए जहान् छोड़ दूं।

दुनिया में लाया तूने,
सब कुछ सिखाया तूने,
मेरे लिए निंदिया अपनी त्यागी,
मेरे लिए ही रात भर जागी,
तेरे बिना क्या वजूद था,
मेरे लिए दुनिया में आना दूर था।
सुंदर भी है नटखट भी है,
दरगाह भी है तीर्थ भी है,
है लफ्ज तू, शीर्षक भी है,
है जन्मदाता, तू विधाता भी है,
पलकों पर बिठाऊं तुझे,
रानी जैसे सजाऊं तुझे,
तू है रब्ब मेरी, रब्ब जानता है
तू माँ है रब मेरी, जग जानता है। ✠

सागरिका महाजन
खुशीनगर नूरपुर,
कांगड़ा

ऊँचाइयां

अगर आप आसमां पर हो,
तो हम भी अपनी जमीं पर हैं,
यह बात अलग है,
एक दिन उतरना आपको भी होगा।

जीत न पाओगे जमीं के बिना,
और इधर
हमें भी एक दिन ऊँचे चढ़ना होगा,
आखिर हमें भी तो बढ़ना होगा,
आप जैसी ऊँचाइयों की ओर।

हम भी एक जगह पर,
कभी टिके न रह पाएंगे,
ये राज की है पहेली।

आपने आसमां ही देखा है,
हमने जमीं-आसमान,
और इन्सान को देखा है,
इन्सान में भगवान को देखा है।

जसवन्त सिंह
तीसा
चम्बा

लाभदायक है अंकुरित अन्न युक्त भोजन

– डॉ. पंकज डोगरा

अंकुरित अन्न में काफी मात्र में पोषक तत्व होते हैं, जो कम मूल्य में ही प्राप्त हो जाते हैं। प्राकृतिक चिकित्सा के अंतर्गत अंकुरित अन्न का बड़ा लाभ है एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी अंकुरित अन्न का प्रयोग लाभदायक है। अंकुरित अन्न में काफी मात्रा में पोषक तत्व होते हैं, बल्कि कम मूल्य में ही प्राप्त हो जाते हैं और उन्हें कच्चा ही खाया जा सकता है। इसके लाभों को देखकर इसे अमृताहार भी कहा जाता है। अंकुरित आहार में मोंठ, मूंग, चना, मेथी, सोयाबीन, मूंगफली आदि को आसानी से अंकुरित किया जा सकता है। जरूरत के अनुसार इसमें खीरा, टमाटर, हरी मिर्च, हरा धनिया, पुदीना, नींबू, सेंधा नमक आदि मिलाकर अत्यंत स्वादिष्ट बनाया जा सकता है। अंकुरित अन्न को खाने से निम्न लाभ प्राप्त होते हैं।

(1) अंकुरण से खाद्य पदार्थों में विटामिन सी, आयरन तथा फॉस्फोरस की मात्रा बढ़ जाती है।

(2) गैर जरूरी तत्व जैसे फाइटेट्स, टैनिन की मात्रा घट जाती है।

(3) इन खाद्य पदार्थों में पाए जाने वाले स्टार्च, ग्लूकोज, फ्रक्टोज और मालटोज में परिवर्तित हो जाते हैं। इससे इनकी पाचकता बढ़ जाती है।

(4) अंकुरित अन्न प्राय: कच्चे ही खाए जाते हैं, जिनसे न केवल ईंधन की बचत होती है अपितु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी सही प्रभाव पड़ता है।

(5) व्यक्ति को सुबह का नाश्ता त्याग कर अंकुरित अन्न ही ग्रहण करना चाहिए।

अन्न अंकुरित करने की विधि

सबसे पहले अंकुरित किए जाने वाले अन्न में से खराब अन्न तथा पत्थर-मिट्टी आदि को निकाल दें तथा पानी में रगड़ कर कई बार धोएं। उसके बाद इतने ही पानी में भिगोएं कि उसके द्वारा सारा पानी सोख लिया जाए। रात भर भीगने के पश्चात् अन्न को सुबह धोकर किसी साफ सूती कपड़े की थैली में बांधकर लटका दें। गर्मियों में हर घंटे के बाद पानी छिड़कते रहें, ताकि नमी बनी रहे। अगले दिन उसमें अंकुर निकल आते हैं अधिक लंबे अंकुर खाने योगय नहीं होते हैं, अत: बीज से दोगुना अंकुर होने पर उसे प्रयोग कर लेना चाहिए। मुरझाए हुए भूरे रंग के एवं दुर्गंध युक्त अंकुर का प्रयोग नहीं करना चाहिए। खाने से पूर्व उन्हें दोबारा अच्छे से धो लें। ✠

औषधि भी है पानी

पानी प्यास बुझाने का साधन मात्र ही नहीं बल्कि यह कई रोगों में औषधि के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

* गर्मी में लू लग जाए तो अधिक मात्रा में पानी पीने से काफी राहत मिलती है।
* फोड़े-फुंसी व खुजली आदि होने पर रोगयुक्त स्थान को पानी से धोने पर रोग फैलने का भय नहीं रहता।
* नाक बंद होने की स्थिति में पानी की भाप लेने से बंद नाक खुल जाती है।
* तेज बुखार होने पर रोगी के माथे पर ठंडे पानी या बर्फ की पट्टियां रखने से कुछ ही देर में बुखार उतर जाता है।
* जोड़ों व हाथ पैरों के दर्द में गर्म पानी की पट्टियां रखने से लाभ होता है।

* चमड़ी पर जलन हो तो ठंडे पानी से धोने से आराम मिलता है।
* दुर्बलता होने व शरीर का ताप बढ़ने पर जितना अधिक हो सके, नमक मिलाकर पानी का सेवन करें और बराबर स्नान करते रहें।
* खांसी, जुकाम व निमोनिया आदि रोगों में अधिक से अधिक पानी पीना लाभप्रद है।

शेष पृष्ठ 30 पर.....

गोस्वामी तुलसी दास जयन्ती पर विशेष
श्री रामचरितमानस के पांच उपदेश

गोस्वामी तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस यूं तो समस्त कल्याणकारी बातों और उपदेश का भंडार है, समस्त शास्त्रों का निचोड़ है, तथापि इसमें भगवान श्रीराम के नाम, रूप, लीला एवं धाम की महिमा का जैसा गान हुआ है वह अन्यत्र दुर्लभ है, इसलिए इसकी विशेष महिमा है। यहां इसी ग्रंथ की कुछ उपदेशप्रद कल्याणकारी बातों को संक्षेप में दिया जा रहा है।

(1) 'बिनु हरि भजन न भव तरिअ': श्रीरामचरितमानस के निम्नलिखित दोहों और चौपाइयों का श्रद्धा सहित बार-बार पाठ करने से भक्ति भावना स्वत: जागृत हो जाती है-

बारि मथे घृत होई बरू सिकता ते बरू तेल।
बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल।।
हरि अनंत हरिकथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।
जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना।
श्रवन रंध्र अहिभवन समाना।।
भगति हीन गुन सब सुख ऐसे।
लवन बिना बहु बिंजन जैसे।।

अर्थात् जल को मथने से भले ही घी उत्पन्न हो जाए और बालू के पेरने से भले ही तेल निकल आए, पर हरि भजन के बिना संसार रूपी समुद्र से नहीं तरा जा सकता। यह सिद्धांत अटल है। भगवान श्रीहरि अनन्त हैं और उनकी कथा भी अनंत है। सब संत लोग बहुत प्रकार से कहते-सुनते हैं। जिन्होंने अपने कानों से भगवान की कथा नहीं सुनी, उनके कानों के छिद्र सांप के बिल के समान हैं। भक्तिरहित सब गुण और सब सुख वैसे ही फीके हैं जैसे नमक के बिना बहुत प्रकार के भोज्य पदार्थ।

(2) बड़ों की बात पर संशय करना ठीक नहीं: बड़ों की बात माननी चाहिए। न मानने पर बहुत पश्चाताप करना पड़ता है। कुपरिणाम भी होता है। प्रसंग है- श्रीराम जी को माता सीता के विरह में व्याकुल देख सती जी के मन में शंका

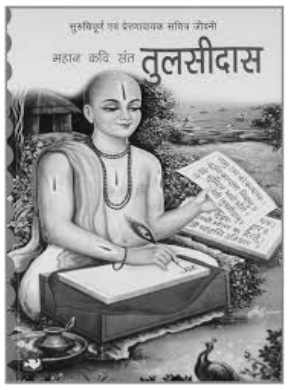

हुई कि असुरों के शत्रु भगवान श्री हरि शिवजी की ही भांति सर्वज्ञ हैं क्या वे अज्ञानी की तरह स्त्री को खोजेंगे? इस पर शिव जी ने उन्हें बहुत बार समझाया। फिर भी सती जी के मन में उनका उपदेश नहीं बैठा। शिव जी का आदेश पाने पर सती जी परीक्षा लेने निकल पड़ीं तथा सीताजी का रूप धारण कर उसी मार्ग की ओर चल पड़ीं। जिस मार्ग पर श्रीरामचंद्र जी आ रहे थे, श्रीरामचंद्र जी सती को पहचान गए तब उन्होंने पहले देवी सती को प्रणाम किया। पिता सहित अपना नाम बताया और पूछा, 'शिवजी कहां हैं?आप वन में अकेली किस लिए फिर रही हैं?' सती जी डरती हुई चुपचाप शिव जी के पास चली गई। शिव जी ने ध्यान करके देखा तो सती जी ने जो चरित्र किया सब जान लिया। सती जी ने सीता का वेश धारण किया। यह सोच कर शिवजी के मन में बड़ा विषाद हुआ। शिवजी ने श्रीराम के चरण कमल में सिर नवाया और मन में यह संकल्प किया कि सती जी के इस शरीर से उनकी पत्नी के रूप में भेंट नहीं हो सकती है। रघुनाथ जी का स्मरण करते हुए शिव जी कैलाश चले गए। पिता प्रजापति दक्ष के यहां यज्ञ का आयोजन हुआ। शिव जी निमंत्रित नहीं थे। फिर भी वे यज्ञ में भाग लेने गईं। वहां पर पति का अपमान देख कर यज्ञाग्नि में कूद कर उन्होंने अपना शरीर भस्म कर डाला। बाद में सती जी का जन्म हिमाचल के घर हुआ जहां उनका नाम पार्वती रखा गया। पार्वती जी की घोर तपस्या से प्रसन्न होकर शिव जी ने उन्हें अपनी अर्द्धांग्नि बनाया। इस तरह अपने से बड़ों की बात न मानने और उनकी हितकारी बात की अवहेलना का परिणाम देवी सती को भुगतना पड़ा तो सामान्य मनुष्य की क्या बात?

(3) अभिमान करना ठीक नहीं: अभिमान करना कितना

शेष पृष्ठ 24 पर.....

अपने दम पर पाया मुकाम

अमेरिका में अपने दम पर सफलता का शिखर पाने वाली 50 महिलाओं की सूची में भारत मूल की दो महिलाओं ने भी जगह बनाई है। सूची में फेसबुक की मुख्य परिचालक अधिकारी शेरिल सैंडबर्ग, मीडिया जगत की हस्ती ओप्रा विनफ्रे जैसी हस्तियां शमिल हैं।

नीरजा सेठी: भारत में जन्मीं नीरजा सेठी 1.1 अरब डॉलर (69.3 अरब रूपए) के नेटवर्थ के साथ अपने दम पर सफलता हासिल करने वालों की सूची में 14वें स्थान पर हैं। नीरजा अपने पति भरत देसाई के साथ मिलकर आईटी परामर्श और आउटसोर्सिंग कंपनी सिनटेल की सह-संस्थापक है। कंपनी का गठन 1980 में हुआ। फोर्ब्स के अनुसार वह सिंटेल में फिलहाल उपाध्यक्ष (कंपनी मामले) हैं। कंपनी की शुरूआत से वह यह भूमिका निभा रही हैं।

जयश्री उल्लाल: लंदन में जन्मीं जयश्री उल्लाल 47 करोड़ डॉलर (2961 करोड़ रूपए) के नेटवर्थ के साथ 30वें स्थान पर हैं। जयश्री एरिस्टा नेटवर्क की अध्यक्ष एवं सीईओ हैं। कंपनी सिलिकॉन वैली की सर्वाधिक मूल्यवान नेटवर्किंग कंपनी के रूप में उभरी हैं। पत्रिका के अनुसार जयश्री अमेरिका के धनी कार्यकारियों में से एक हैं। ✠

सांसद की शिक्षिका बेटी, सड़क किनारे बेच रही है आम

आम बेचने वाली यह महिला आम नहीं हैं। लगातार आठ बार सांसद व लोकसभा के डिप्टी स्पीकर रह चुके करिया मुंडा की बेटी हैं। नाम है चंद्रावती सारू, ये पेशे से शिक्षिका है। बगीचे में जरूरत से ज्यादा आम हुए हैं, तो उन्हें सड़क किनारे बैठक बेचने में यह बात आड़े नहीं आई कि वे झारखंड के बड़े नेता की बेटी हैं। आठ बार सांसद, चार बार केंद्रीय मंत्री और दो बार विधायक रहे करिया का जीवन आज के राजनेताओं के लिए एक मिसाल है। व्यक्तिगत जीवन बिल्कुल वैसा ही जैसा अब से चार दशक पहले था, जब वह पहली बार सांसद चुने गए थे। झारखंड के आदिवासियों के संसद में अकेले प्रतिनिधि। आज भी गांव आते हैं तो वैसे ही खेतों में हल -कुदाल चलाते हैं, तालाब में नहाते हैं। नक्सली हिंसा के लिए देश के सबसे खतरनाक खूंटी जिले में मामूली सुरक्षा के साथ घूमते हैं। ✠

संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में इरा सिंघल टॉपर बनी

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने सिविल सेवा परीक्षा वर्ष 2014 का परिणाम घोषित कर दिया है। इस प्रतिष्ठित परीक्षा में शीर्ष चार स्थानों पर छात्राओं ने परचम लहराया है। शारीरिक रूप से अशक्त दिल्ली की इरा सिंघल देश भर में प्रथम स्थान पर रही हैं। वहीं, केरल की रेणु राज ने दूसरा तथा दिल्ली की निधि गुप्ता व वंदना राव ने क्रमश: तीसरा व चौथा स्थान प्राप्त किया है। शारीरिक रूप से अशक्त टॉपर 31 वर्षीय इरा सिंघल मजबूत इरादों और ठोस आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति हैं। आईएएस बनने की चाह में उनकी अशक्तता आड़े नहीं आई। वह सोलिऑसिस नामक बीमारी से ग्रस्त हैं।

इसमें इंसान की रीढ़ की हड्डी सामान्य तौर पर कमर या सीने के पास से दायीं या बायीं तरफ मुड़ जाती है। उन्होंने छठी कोशिश में सफलता हासिल की है। उनका कहना है कि मैं आईएएस बनना चाहती थीं और लगातार तैयारी करती रहीं। इस कामयाबी पर मुझे भरोसा ही नहीं हुआ। मैं अशक्त लोगों के हित में काम करना चाहती हूं। ✠

चार साल पहले ऑटो चलाते थे, अब प्लेन उड़ाते हैं

नागपुर के श्रीकांत पंतवणे की कहानी, मप्र के सागर में ट्रेनिंग ली, अभी इंडिगो एयरलाइंस में को-पायलट हैं। वह कहा करते थे, 'तीन पहिए मेरी जिंदगी हैं। इन्हीं से दुनिया देखनी है' और वाकई, उसने अपने सपने को सच कर दिखाया। महज चार साल पहले वह नागपुर की सड़कों पर ऑटो चलाता था। आज इंडिगो एयरलाइन्स के विमान उड़ाता है। यह शख्स है, श्रीकांत पंतवणे। खुद 12वीं तक पढ़े थे। अंग्रेजी आती नहीं थी। पिता चौकीदारी करते थे। परिवार की माली हालत, इन्हें तो क्या किसी भी सदस्य को बड़े सपने देखने की इजाजत देने को राजी नहीं थे। पर इन्होंने देख लिए। एक बार ऑटो से किसी सामान की डिलीवरी हेतु नागपुर एयरपोर्ट गए थे। वहीं पहली बार रनवे पर चीखते हवाई जहाज के पहियों की आवाज कान में पड़ी। कोई फ्लाइट उतरी थी। कुछ देर बाद यूनीफॉर्म पहने सामने से आ रहे कुछ लोगों पर नजर पड़ी। उनके बारे में जानने की ज्यादा इच्छा हुई तो एयरपोर्ट के बाहर चाय की दुकान पर खड़े कुछ पढ़े-लिखे से दिखने वाले लोगों से पूछ बैठे। उन्होंने बताया कि वे यूनीफॉर्म वाले लोग पायलट हैं। विमान उड़ाते हैं। रहा नहीं गया तो उन्हीं लोगों से यह भी पूछ लिया कि पायलट कैसे बनते हैं? लेकिन उन्होंने जो बताया, उससे एक बार तो हिम्मत जवाब ही देने लगी। जितना खर्च, जितनी पढ़ाई-लिखाई चाहिए थी, वह तो कुछ भी नहीं था। लेकिन अब तक ठान लिया था कि पायलट ही बनना है। उन्हीं लोगों में से किसी ने बताया था कि 12वीं की पढ़ाई के बाद ही पायलट की ट्रेनिंग के लिए सरकार से स्कॉलरशिप मिल जाती है। सो, फिर किताबें उठाईं और तैयारी शुरू कर दी। दिन में ऑटो चलाना। इसके बाद रात में पढ़ाई करना। रोज का सिलसिला हो गया। जरूरत को देखते हुए फिजिक्स पर ज्यादा ध्यान दिया। आखिर सन् 2011 में स्कॉलरशिप मिल गई। उसी के दम पर मध्यप्रदेश के सागर में चाइम्स एविएशन अकादमी में दाखिला भी मिल गया। लेकिन यहां नया संघर्ष। एक तो अंग्रेजी सीखना जरूरी था। दूसरा किताबें खरीदना तो दूर उनकी फोटो कॉपी कराने के भी पैसे नहीं थे। इसलिए, लाइब्रेरी की मदद ली। नतीजा, हर असेसमेंट में सबसे ऊपर नाम होता। दो साल में कोर्स पूरा हो गया पर नौकरी नहीं मिली। इसलिए नागपुर में ही एक कंपनी में काम कर लिया। पर दिल की लगी अभी बुझी नहीं थी। सो, फिर तैयारी की। एक और स्कॉलरशिप की मदद से सन् 2013 के आखिर में हैदराबाद के सेंट्रल इस्टेब्लिशमेंट में दाखिला लिया। वहीं से इंडिगो के लिए कैंपस सलेक्शन हुआ। आखिर अप्रैल सन् 2015 में उनके सपनों को हकीकत के पंख लगे। श्रीकांत कंपनी के को-पायलट बने। अब वे सच में हवा में उड़ते हैं। आसमान से बातें किया करते हैं।✠

साभार: दैनिक भास्कर

12 साल में बांटे 1 लाख पौधें

हयातनगर में 65 वर्षीय जसबीर सिंह कैहलों 12 साल से पर्यावरण बचाने के लिए लोगों को निशुल्क पौधे बांट रहे हैं। वह अब तक एक लाख से ज्यादा पौधे बांट चुके हैं। हालांकि उन्हें एक बात का दुख है कि पर्यावरण को लेकर समाज की कथनी और करनी में अंतर है। उम्र के जिस पड़ाव में लोग आराम करने को प्राथमिकता देते हैं, वह उसमें भी लोगों को पर्यावरण के प्रति सचेत बनाने को प्रयासरत हैं। कैहलों ने बताया कि वह सरकारी, गैर-सरकारी स्कूलों, कॉलेजों, धार्मिक स्थलों और खासकर ग्रामीण मेलों में लोगों को पौधे बांटते हैं। उनका कहना है कि प्रकृति की सेवा से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता और उनका जीवन इसी की सेवा को समर्पित है। कैहलों हयातनगर में अपनी करीब छह किल्ले जमीन में जहां परिवार के गुजारे के लिए सब्जियां आदि उगाते हैं, वहीं पर पौधों की पनीरी भी तैयार करते हैं। इसके लिए वह बीज एकत्र करने के लिए बागों के चक्कर काटते रहते हैं यदि उन्हें कहीं कोई औषधि पौधा दिखाई दे जाए तो उसकी देखभाल के लिए उसे घर ले जाते हैं। फिर उसी पौधे से आगे पनीरी तैयार करते हैं, जिनसे पौधे बनने के बाद उन्हें लोगों को बांट देते हैं। ✠

चतुर्थः पाठः

वार्तालापः- वाक्यानि (यात्रा)

अहो, महान् सम्मर्दः।	ओह, बहुत भीड़ है।
चिटिका कुतः क्रीणामि?	टिकट कहां से खरीदूं?
शीघ्रम् आगच्छतु, यानं गमिष्यति।	जल्दी आओ गाड़ी निकल जाएगी।
अहं भवतः पार्श्वे उपविशामि।	मैं आपके पास बैठूंगा
आगच्छतु किंचिद् समंजनं कुर्मः।	आओ, जरा एडजस्ट करते हैं।
किम् अग्रिमं स्थानकम् अस्माकम्?	क्या अगला पड़ाव (बस स्टॉप) हमारा है?
तद् यानं कदा निर्गच्छति?	वह गाड़ी कब जाएगी?
यानस्य निर्गमनाय इतोअपि अर्धघण्टा अस्ति।	गाड़ी जाने में अभी भी आधा घंटा है।
पंचवादने अपि एकं यानम् अस्ति।	पांच बजे भी एक बस है।
भवान् शीघ्रं न गच्छति, चेत यानं न लभ्यते।	आप जल्दी नहीं जाएंगे तो गाड़ी नहीं मिलेगी।

शब्दकोषः (शरीर-नामानि)

हस्तः (पु.)	– हाथ
उदरम् (नपु.)	– पेट
अङ्गुलीः (पु.)	– अंगुली
वक्षः (पु.)	– छाती
अङ्गुष्ठः (पु.)	– अंगूठा
उरुः (पु.)	– जांच
कूर्परः (पु.)	– कोहनी
कपोलः (पु.)	– गाल
स्कन्धः (पु.)	– कंधा

व्याकरणम् (मध्यम पुरूषः/भवत् शब्दः)

संस्कृत साहित्य में भवत् शब्द (भवन्, भवन्ती, भवन्तः) (भवती, भवत्यौ, भवत्यः) का प्रयोग त्वं, युवां, यूयम् शब्दों के समान अर्थ में होता है। इस भवत् शब्द का अर्थ आप एवं तुम दोनों ही माने जाते हैं। किन्तु भवत् शब्द के रूपों के साथ केवल प्रथम पुरूष के धातु रूपों का ही प्रयोग होता है। अतः सामान्यतः मध्यम पुरूष के शब्दों के स्थान पर भवत् शब्द के रूपों का प्रयोग किया जा सकता है। जो कि प्रारम्भिक स्तर के संस्कृत सम्भाषण के लिए सरल होता है।

आप/तुम पढ़ते हो।	भवान् पठति।	आप दोनों/तुम दोनों पढ़ती हो।	भवत्यौ पठतः।
आप/तुम पढ़ती हो।	भवती पठति।	आप सब/तुम सब पढ़ते हो।	भवन्तः पठन्ति।
आप दोनों/तुम दोनों पढ़ते हो।	भवन्तौ पठतः।	आप सब/तुम सब पढ़ती हो।	भवत्यः पठन्ति।

मतांतरण के बाद अनुसूचित जाति का दर्जा समाप्त

पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय ने निर्णय दिया है कि अनुसूचित जाति या जनजाति का कोई व्यक्ति ईसाई या मुसलमान बन जाता है तो उसका अ.जा., जनजाति का दर्जा समाप्त हो जाता है। ईसाई और मुसलमान अ.जा. व जनजाति के लाभ नहीं ले सकते। उच्च न्यायालय ने यह निर्णय बीती 30 अप्रैल को दिया। पंजाब में वर्ष 2012 में विधान सभा के चुनाव हुए थे इसमें अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित विधान-सभा क्षेत्र भदौर से अकाली दल के दरबारा सिंह गुरू ने चुनाव लड़ा। उनके सामने कांग्रेस ने मोहम्मद सिद्दीकी को खड़ा किया, जिनका परिवार एक पीढ़ी पहले मुसलमान बन गया था। मतांतरण से पहले उनका परिवार अनुसूचित जाति का था और वे इस आरक्षित क्षेत्र से चुनाव जीत गए। श्री दरबारा सिंह ने उनके चुनाव को उच्च न्यायालय में चुनौती

दी। न्यायालय ने उक्त निर्णय देते हुए श्री मोहम्मद सिद्दीकी का चुनाव निरस्त कर दिया।

उधर देश के सर्वोच्च न्यायालय ने फिर कहा कि देश में समान नागरिक कानून होने चाहिए। न्यायमूर्ति विक्रमजीत सेन और अभय मनोहर सप्रे की खण्ड-पीठ ने 11 मई, 2015 को एक मामले में यह आवश्यकता बताई और जोर दिया कि एक सेकुलर कानून सभी समुदायों के लिए बनाया जाना चाहिए। ✠

साभारः दिव्य हिमाचल

राष्ट्रीयता की रक्षा, समरसता के बंधन से

– प्रमोद बापट

अपने हिंदू समाज के व्यक्तिगत तथा पारिवारिक जीवन में रीति, प्रथा तथा परंपरा से चलती आयी पद्धतियों का एक विशेष महत्व है। अपने देश की भौगोलिक विशालता तथा भाषाई विविधता होते हुए भी समूचे देश में विविध पर्व, त्यौहार, उत्सव आदि सभी सामूहिक रीति से मनाये जाने वाले उपक्रमों में समान सांस्कृतिक भाव अनुभव किया जाता है। इसी समान अनुभव को 'हिंदुत्व' नाम दिया जा सकता है। कारण 'हिंदुत्व' यह किसी उपासना पद्धति का नाम नहीं है। सर्वोच्च न्यायालय ने भी इसी कारण 'हिंदुत्व' को एक जीवनशैली बताया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आरंभ से ही हिंदू जागरण तथा संगठन के अपने स्वीकृत कार्य को बढ़ाने तथा दृढ़ करने हेतु समाज के मन में सदियों से अपनायी हुई इसी समान धारणा को अपनी कार्यपद्धति में महत्वपूर्ण स्थान दिया। आगे आने वाला 'रक्षाबंधन' पर्व एक प्रमुख उत्सव है। श्रावण मास की पूर्णिमा को भारतवर्ष में रक्षाबंधन पर्व के नाम से मनाया जाता है। राजस्थान, गुजरात जैसे पश्चिमी प्रदेशों में अधिक हर्षोल्लास से इसे मनाया जाता है। रक्षा बंधन त्यौहार से भी अनेक पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएं जुड़ी हैं।

पौराणिक काल में देवराज इंद्र की पत्नी शुची ने देव-दानव युद्ध में विजय प्राप्ति के लिये इंद्रदेव के हाथ पर रक्षासूत्र बांधा था, तो माता लक्ष्मी ने बलिराजा के हाथ में रक्षासूत्र बांधकर विष्णुजी को मुक्त किया था। इस प्रसंग का स्मरण कराने वाला 'येन बद्धो बलिराजा' यह श्लोक प्रसिद्ध है। इतिहास में चित्तौड़ के वीर राणा सांगा के वीरगति प्राप्त होने पर चित्तौड़ की रक्षा करने रानी कर्मवती ने राखी के बंधन का कुशलता से प्रयोग किया था।

आधुनिक काल में स्वातंत्र्य संग्राम में बंग-भंग विरोधी आंदोलन में राष्ट्रकवि गुरूदेव रवींद्रनाथ ठाकुर ने बहती नदी में स्नान कर एकत्रित आये समाज को परस्पर रक्षासूत्र बांधकर, इस प्रसंग के लिये रचा हुआ नया गीत गाकर अपनी एकता के आधार पर ब्रिटिशों पर विजय की आकांक्षा जगायी थी। साथ-साथ समाज में बहनों ने भाई को विशिष्ट जाति के आश्रित व्यक्तियों ने धनवानों को श्रावण पूर्णिमा के दिन राखी बांधने की प्रथा प्राचीन काल से प्रचलित है।

रा.स्व.संघ ने इन सारी कथा, प्रसंग, प्रथाओं के माध्यम से व्यक्त होने वाले भाव को अधिक समयोचित स्वरूप दिया। कारण उपरोक्त सारी कथाएं और प्रथाएं भी राखी के साधन व आत्मीयता के धागों से परस्पर स्नेह का भाव ही प्रकट करती हैं। यही स्नेह आधार का आश्वासन भी देता है और दायित्व का बंधन भी। समाज में परस्पर संबंध में आये हुए विशिष्ट प्रसंग के कारण पुराण या इतिहास काल में रक्षासूत्र का प्रयोग हुआ होगा पर ऐसा प्रत्यक्ष संबंध न होते हुए भी हम सब इस राष्ट्र नागरिक हैं, हिंदू हैं। यह संबंध भी अत्यंत महत्वपूर्ण है और व्यक्तिगत से और अधिक गहरा यह महत्वपूर्ण नाता ही सुसंगठित समाज शक्ति के लिये आवश्यक होता है। यह नाता समान राष्ट्रीयता, समान राष्ट्रीय अभिमान, अस्मिता तथा आकांक्षा का है। इस राष्ट्रीय-सांस्कृतिक रक्षा बंधन से हमारा पारस्परिक एकात्म भाव बढ़ेगा। किसी भी दुर्बल की उपेक्षा नहीं होगी और बल सम्पन्न दायित्व से समाज दूर नहीं रहेगा।

डॉ0 आंबेडकर ने भी अपने ग्रंथों एवम् भाषणों में हिंदू समाज की आंतरिक गहरी एकात्मता का वर्णन किया है।

इस आंतरिक गहरे एकात्म भाव का प्रकटीकरण ही उसके अस्तित्व की पुष्टि करेगा और रक्षा बंधन ही हमारे भीतरी, अटूट एकरसता को व्यक्त करने का समरसता-प्रेरक पर्व है। राखी यह एक सरल सादा साधन है, जिसके धागे से न केवल हाथ बंधेंगे पर उससे अधिक मन बंधेंगे, हृदय बंधेंगे।

अपने समाज में एकत्व जगाने का ऐतिहासिक कार्य आरंभ में संतों ने किया था। बारहवीं सदी से संपूर्ण देश में भक्ति आंदोलन की एक ज्वार उठी। भक्ति के, परमार्थ के पथ पर एकात्मता के मंत्र ने समाज को संगठित किया। आगे ब्रिटिश काल में अनेक समाज सुधारकों ने विचारों के आधार पर सामाजिक समता का अलख जगाया। स्वतन्त्रता के पश्चात् भी संपूर्ण समाज के एकात्म, एकरस होने की आश्यकता बनी रही और कुछ नये कानून, दंड विधान, आरक्षण जैसी व्यवस्थाओं के माध्यम से प्रयास होते रहे, पर अभी भी पूर्ति से दूर ही रहे हैं। इसका एक कारण यह होगा कि, एकात्म एकरस समाज यह किसी बाह्य उपचारों से प्राप्त नहीं होंगे। इसकी आवश्यकता समाज के सभी घटकों में निर्माण हो और उस की प्रत्यक्ष अनुभूति भी समाज का हर एक घटक स्वयं करे। आने वाला रक्षाबंधन का पर्व इसी अनुभूति का पर्व हो और इस अवसर पर प्राप्त अनुभूति अपने समाज की स्थायी, सहज स्थिति हो इसलिये हम सब प्रयत्नशील हो। ✠

पृष्ठ 20 का शेष.....

दुखदायी होता है, इस संदर्भ में नारद जी का एक प्रसंग द्रष्टव्य है- एक बार नारद जी के मन में इस बात का अंहकार हो गया कि उन्होंने कामदेव को जीत लिया है। श्रीहरि के मन में विचार आया कि नारद जी के मन में गर्व के भारी वृक्ष का अंकुर पैदा हो गया है। इसे समाप्त करना उन्होंने अपना कर्तव्य समझा। उन्होंने माया से चार सौ कोस का एक नगर रचा। उस नगर में शीलनिधि नामक एक राजा रहता था। उसकी एक रूपवती कन्या थी, जिसका नाम था विश्वमोहिनी। उसके विवाह के लिए एक स्वयंवर का आयोजन किया गया था।

इस स्वयंवर में विश्वमोहिनी जिसके गले में जयमाला डालती उसी से उसका विवाह होता। नारद जी ने पहले ही उस कन्या को देख लिया था और उससे विवाह करने का मोह हो गया। इसलिए उन्होंने श्रीहरि का ध्यान किया वे प्रकट हुए तो नारद जी ने उनसे अपने जैसा ही सुन्दर स्वरूप देने की विनती की। श्री हरि ने देखा कि नारद जी पथभ्रष्ट हो रहे हैं इसलिए उनका स्वरूप बहुत कुरूप (बंदर जैसा) कर दिया। इस तरह नारद जी का बहुत उपहास हुआ और उन्हें अभिमान का परिणाम भुगतना पड़ा।

(4) भगवान पर दृढ़ विश्वास और आस्था रखना: रामायण से हमें दृढ़ विश्वास और आस्था का उपदेश मिलता है। पार्वती जी ने शिवजी से विवाह करने की कठोर प्रतिज्ञा कर ली थी। 'बरऊं संभु न तो रहऊं कुंआरी।'
इसके लिए उन्होंने राजमहल के सुख को छोड़ कर पत्तों का आहार किया बाद में पत्ते भी त्याग दिए। यहां तक कि सप्तऋर्षियों के कहने पर भी शिव जी के स्थान पर भगवान श्रीहरि से विवाह करना स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार कठोर तपस्या के बाद उनका प्रण सत्य हुआ।

(5) 'राम काजु कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्रामा'- हनुमान जी की कार्यकुशलता बहुत सराहनीय है। राम कार्य की सम्पूर्णता ही उनके जीवन का ध्येय है। उससे पूर्व विश्राम या गतिरोध उन्हें स्वीकार नहीं। जब वह लंका की ओर प्रस्थान कर रहे थे तब देवों ने उनकी परीक्षा लेने सुरसा को भेजा। सुरसा जितना बड़ा मुंह करती हनुमान जी अपना रूप उससे दोगुना कर लेते थे। सुरसा ने सौ योजन का अत्यंत विशाल रूप बनाया तो हनुमान जी ने बहुत छोटा रूप धारण किया और उसके शरीर में प्रवेश किया तथा बाहर निकल आए। सुरसा उनकी कार्यकुशलता से बहुत प्रसन्न हुई और आशीर्वाद दिया कि तुम जिस कार्य से जा रहे हो उसमें सफलता मिलेगी और हुआ भी यही। हनुमान जी सफल मनोरथ हो वापस लौटे। इस प्रकार श्रीरामचरितमानस की इन शिक्षाओं को हम अपने जीवन में उतार लें तो फिर सच्चे कल्याण की प्राप्ति में विलम्ब नहीं। ✠

13 साल के छात्र ने बनाया सस्ता ब्रेल प्रिंट

नेत्रहीनों के पढ़ने के लिए अभी तक सिर्फ ब्रेल लिपि ही है, जिसके जरिए वे छूकर पढ़ सकते हैं। लेकिन इस लिपि में किताब का प्रकाशन करना जटिल कार्य है। इस कार्य को आसान बनाने का कार्य किया है भारतीय मूल के अमेरिकी छात्र शुभम बनर्जी ने। शुभम अभी मात्र 13 साल का है और कैलीफोर्निया के एक स्कूल में आठवीं कक्षा में पढ़ता है। उसने बहुत कम कीमत में ब्रेल प्रिंटर तैयार कर दिया है। इस काम के कारण माइक्रोसॉफ्ट कंपनी ने उसे अपने साथ जोड़ा है। वह अभी इस प्रिंटर को विंडोज़ के साथ इंटीग्रेट करने का कार्य कर रहा है। ✠ साभार: पथिक संदेश

मंगलयान के लिए इसरो को अमेरिकी सम्मान

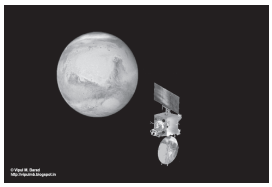

भारत की मंगल अभियान टीम को अमेरिकी नेशनल स्पेस सोसायटी (एनएसएस) से सन् 2015 का स्पेस पॉयनियर अवार्ड मिला है। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) को यह पुरस्कार विज्ञान और प्रौद्योगिकी श्रेणी में दिया गया है। इसरो की वेबसाइट के अनुसार यह सम्मान कनाडा के टोंरटो में 20-24 मई को आयोजित 34वें अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष विकास सम्मेलन के दौरान दिया गया। इसमें कहा गया है कि इसरो को यह पुरस्कार पहले प्रयास में भातीय अंतरिक्ष यान को मंगल की कक्षा में पहुंचाने के लिए दिया गया है। जैसा कि आपको विदित है कि अंतरिक्ष की दुनिया में इतिहास रचते हुए भारत को मंगलयार 24 सिंतबर, 2014 को मंगल ग्रह की कक्षा में प्रवेश कर गया था। इसके साथ ही भारत अमेरिका, रूस और यूरोप के उस समूह में शामिल हो गया, जिन्होंने मंगल अभियान में सफलता हासिल की है।✠

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां, ज़िला ऊना

हिमाचल प्रदेश

01 से 23 अगस्त तक होने वाले सत्संग

01 अगस्त श्री सतीश कुमार फौजी, वहडाला, 9816107451
01 से 09 अगस्त वृन्दावन आश्रम
10 अगस्त कामिका एकादशी
11 अगस्त श्री विक्रम सिंह, दडोह गगरेट मो. 9886872644
12 अगस्त बाबा नागनाथ मंदिर, अम्बोटा मो. 9882374499
13 अगस्त श्री हरीराम ज्वाला देवी, स्वारघाट मो. 9817189522
बेडा कमेटी, सन्तोषगढ़ मो. 9816204599
14 अगस्त श्री तरसेम लाल पूर्व प्रधान ईसपुर सत्संग व भण्डारा मो. 9805401269
श्री मंगत राम रैंसरी सत्संग व भण्डारा मो. 9836404543
15 अगस्त श्री सतीश पुरी, ईसपुर सत्संग व भण्डारा मो. 9816041716
श्री ज्ञान चंद, आदर्श नगर, हमीरपुर रोड़, ऊना मो. 9817312006
16 अगस्त श्री भगत सिंह क्लब नूरपुर बेदी, मो. 9417661923
श्री धर्मपाल, काहनपुर खुर्द सत्संग व भण्डारा मो. 9592022882
17 अगस्त संक्रांति
18 से 22 अगस्त दिल्ली बाबा बालकनाथ मंदिर, कर्मपुरा, नजदीक हिमाचल भवन, मिलन सिनेमा, मोती नगर मैट्रो स्टेशन, दिल्ली मो. 9810085272
23 अगस्त श्री मनसा देवी मंदिर, गगरेट मो. 8874268405

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सेंटर

गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

साध्वी ऋतंभरा जी का 'वात्सल्य ग्राम'

उत्तर प्रदेश का एक नितांत धार्मिक और एतिहासिक शहर-वृंदावन में करीब 54 एकड़ परिसर में साध्वी ऋतंभरा जी का 'वात्सल्य ग्राम' आश्रम है। इस आश्रम द्वारा लोगों ने छोड़े हुए बच्चों, महिलाओं और वृद्धों के निवास की व्यवस्था है। आश्रम के विशाल दरवाजे के बाईं ओर एक पालना लगा है। कोई भी व्यक्ति कभी भी इस पालने में अनचाहा बच्चा रखकर जा सकता है।

पालने में बच्चा रखने वाले से आश्रम से सम्बंधित व्यक्ति कोई भी प्रश्न नहीं पूछता। पालने में कोई बच्चा रखते ही पालने पर लगा सेंसर आश्रम के व्यवस्थापक को इसकी सूचना देता है और आश्रम का कोई अधिकारी आकर बच्चे को आश्रम में ले जाता है। ऐसे छोड़े गए बच्चे का आश्रम में प्रवेश होते ही वह 'वात्सल्य ग्राम परिवार' का सदस्य बन जाता है। वह अनाथ नहीं रहता यहां छोड़े हर बच्चे का उपनाम परमानंद है। आश्रम में बच्चों के लिए 'सामवेद गुरूकुलम्' पाठशाला है। यहां सीबीएसई के अभ्यास क्रमानुसार पढ़ाई के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास के उपक्रम चलाए जाते हैं। बच्चों की नैतिक शिक्षा के लिए रामायण जैसे महाकाव्य के

प्रसंगों की झांकियां बनाई गई हैं। इन बच्चों को नेचरोपथी और योग की शिक्षा भी दी जाती है।

बच्चों को पांचवीं तक आश्रम के गोकुलम में रखा जाता है, फिर आगे की पढ़ाई के लिए उन्हें एक पास ही स्थित विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाता है जिससे वे भविष्य में अपने पैरों पर खड़े हो सकें। यहां का वातावरण सुरम्य व अत्यंत पारिवारिक है तथा आए हुए व्यक्ति को अन्जान स्थान नहीं लगता है। बच्चों की परवरिश के लिए विभिन्न प्रकार के क्रिया-कलापों के माध्यम से उन्हें प्रवीण बनाया जाता है। कन्या शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। पढाई पूर्ण करने के पश्चात् कन्याओं के विवाह की भी व्यवस्था की जाती है। ✠

ARNI UNIVERSITY

अर्नी विश्वविद्यालय

काठगढ़, तहसील इन्दौरा, जिला कांगड़ा (हि०प्र०)

शिक्षा में सर्वांगिण विकास में सतत प्रयासरत हिमाचल देवभूमि का अग्रणी विश्वविद्यालय।

1. बालिका उच्च शिक्षा हेतु 50% फीस में छूट।
2. हिमाचल निवासीयों के छात्रो को 25% फीस में छूट।
3. प्रदेश का वृहद विश्वविद्यालय।
4. वातानूकूलित कक्षाएं।
5. Wi-Fi प्रांगण।
6. अनूसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग को केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा प्रयोजित कार्यक्रम के अनुसार निशुःल्क शिक्षा।
7. छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक छात्रावास की सुविधा।
8. रैगिंग मुक्त विश्वविद्यालय।
9. किताबों से सुस्जजित पुस्तकालय।
10. यातायात की सुविधा।
11. विद्यार्थियों के सर्वांगिण विकास हेतु खेल के मैदान।

20 kms from Pathankot on Jalandhar Road

UNDER GRADUATE COURSES

* B.Tech in Civil, ME, ECE, EEE, CSE, Biotech & Automobile.
* Bachelor of Business Administration (BBA).
* Bachelor of Hotel Management and Catering Technology (BHMCT).
* Bachelor of Computer Application (BCA).
* B.Com & B.Com (Hons).
* B.Sc Non-Medical, Medical, Biotechnolgy & Microbiology.
* B.Sc (Hons) in Physics, Chemistry & Mathematics.
* BA & BA (Hons) in English, Economics

POST GRADUATE COURSES

* Master of Business Administration (MBA).
* Master of Computer Application (MCA).
* M.Tech in CSE, ME, EEE, Biotech & Civil.
* M.Sc. in Mathematics, Physics, Chemistry, Biotechnology, Microbiology, Botany & Zoology.
* M.A. English, Economics.
* M.Com.

SMS "ARNI" to 53030

ARNI UNIVERSITY

Campus: Kathgarh (Indora), Distt. Kangra (H.P.)-176401
Mob: 09888599102, 09888599129
Phone No: 01893-302000, Tollfree No: 1800-200-0049
Website: www.arni.in, www.arni.edu.in, Email: info@arni.in

वोट बटोरने के लिए ममता का नया हथकंडा

देश के मुस्लिम वोट बैंक में अपनी सेंध लगाने के लिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने करोड़ों रूपए फूंक डाले हैं। कोलकाता में तीन दिवसीय जश्न-ए-इकबाल का आयोजन किया गया। इस समारोह का आयोजन राज्य की उर्दू अकादमी द्वारा किया गया था। इस अवसर पर उर्दू शायर और पाकिस्तान के प्रवर्तक मोहम्मद इकबाल को तराना-ए-हिन्दी अवॉर्ड से नवाजा गया जबकि राज्य की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी को पासबाने उर्दू (उर्दू रक्षक) नामक अवॉर्ड पेश किया गया।

इस समारोह में भगा लेने के लिए 35 देशों से उर्दू साहित्यकारों एवं उर्दू पत्रकारों के प्रतिनिधिमंडलों को सरकारी खर्च पर बुलाया गया था। देशभर के डेढ़ हजार से अधिक उर्दू समाचार पत्रों को इस समारोह के एक-एक पृष्ठ के बहुरंगी विज्ञापन भी सरकारी खर्च पर दिए गए। कोलकाता से प्रकाशित होने वाले अखबार मशरिक एवं आजाद हिन्द आदि उर्दू समाचार पत्रों ने इकबाल के बारे में विशेष संस्करण जारी किए।

इन समाचार पत्रों के इन संस्करणों को छापने के लिए लाखों रूपए की सहायता सरकार द्वारा प्रदान की गई। इस समारोह को सफल बनाने के लिए राज्य सरकार ने अपने पूरे साधन मैदान में झोंक दिए। उल्लेखनीय है कि पश्चिम बंगाल में मुसलमान मतदाताओं का अनुपात 30 प्रतिशत है।

इसलिए प्रदेश की राजनीति में वे खास महत्व रखते हैं। मुस्लिम नेताओं का दावा है कि मुसलमानों की नाराजगी के कारण ही राज्य में मार्क्सवादियों को सत्ता से हाथ धोना पड़ा है। ममता बनर्जी शुरू से ही मुसलमान मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए नए-नए हथकंडे अपनाती रही हैं। उन्होंने रंगनाथ मिश्रा कमीशन की रिपोर्ट की सिफारिशों को लागू करके मुसलमानों को 12 प्रतिशत आरक्षण दे दिया है। इसके अतिरिक्त राज्य के 12 जिलों में उर्दू को दूसरी भाषा का दर्जा भी दिया जा चुका है।

कोलकाता स्थित मदरसा आलिया को अरबी और फारसी विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। राज्य के प्रत्येक जिले में हज केंद्र खोले गए हैं। पश्चिम बंगाल शायद देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहां दो लाख से अधिक मस्जिद के इमामों और मौजानों को सरकार की ओर से प्रत्येक महीने 7 हजार से लेकर 10 हजार तक वेतन सरकारी खजाने से दिया जाता है। ✠

अश्वेत महिला मेयर बनीं तो गोरों ने नौकरी छोड़ दी

अप्रैल माह के अंत में अमरीकी संसद की एक समिति ने कहा कि भारत में अल्पसंख्यकों से भेद-भाव होता है। यह समाचर मिलते ही भारत के सेकुलरवादियों की बाछें खिल गईं। 1 मई के सारे अंग्रेजी समाचार पत्रों में अमरीकी समिति की रपट पहले पन्ने पर प्रमुखता से प्रकाशित हुई। अमरीका की सरकार खुद को पूरी दुनिया का संरक्षक समझती है और अन्य देशों को उपदेश देना अपना कर्तव्य मानती है। पर खुद अमरीका की स्थिति क्या है? अब भी वहां अश्वेत अफ्रीकी वंश के लोगों को छोटा और दुत्कारने योग्य माना जाता है। अमरीका का एक प्रांत मिसूरी है। यह अमरीका के लगभग मध्य में है तथा पार्मा इस प्रांत का एक नगर है। अप्रैल माह के तीसरे सप्ताह में हुए चुनाव में एक अश्वेत महिला रॉयस वॉयर्ड पहली बार इस नगर की मेयर चुनी गई। चालीस साल की कुमारी वॉयर्ड को 23 अप्रैल को शपथ लेनी थी।

शपथ लेने के पहले ही उन्हें पता लगा कि नगर परिषद् के अधिकांश गोरे अधिकारियों ने त्यागपत्र दे दिया है। जिस अधिकारी को रॉयस वॉयर्ड को शपथ दिलवानी थी उसने भी त्यागपत्र दे दिया। यह हो रहा है अमरीका में, फिर भी अमरीकी उपदेश देते रहते हैं। अमरीकियों को शायद यह समझाने की जरूरत है कि 'जिनके अपने घर शीशे के हों वो औरों पर पत्थर नहीं फेंका करते।' ✠

डिजिटल इंडिया- रिपोर्ट

डिजिटल दुनिया में लगातार हमारी पहुंच बढ़ रही है। अब ई-सेवाओं तक लोगों की पहुंच सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम शुरू किया है। इसके तहत 'डिजिटल लॉकर सिस्टम' की शुरूआत की जा रही है। 'डिजिटल लॉकर' का इस्तेमाल जरूरी दस्तावेजों को सहेजने में कारगर साबित होगा। यही नहीं, जन्म प्रमाण पत्र, पासपोर्ट और शैक्षणिक प्रमाण पत्रों के साथ में लेकर चलने का झंझट भी खत्म हो जाएगा।

जानें डिजिटल लॉकर

डिजिटल लॉकर एक ऐसी सुविधा है, जो प्रत्येक नागरिक की आधार संख्या में जुड़ा हुआ है। नौकरी-पेशा और विद्यार्थियों के लिए यह वरदान से कम नहीं है। इससे दस्तावेजों को सुरक्षित रखना बेहद आसान हो गया है। डिजिटल लॉकर में जन्म प्रमाण-पत्र, पासपोर्ट, शैक्षणिक प्रमाण-पत्र और पैन-कार्ड जैसे अहम दस्तावेजों को सहेजने के लिए इंटरनेट स्पेस मुहैया कराया जाएगा। साथ ही जरूरत के अनुसार कहीं भी किसी भी समय पासवर्ड डालकर डॉक्यूमेंट्स का प्रिन्ट भी ले सकते हैं। डिजिटल लॉकर में ई-साइन की सुविधा भी है, जिसका उपयोग डिजिटल हस्ताक्षर करने के लिए किया जा सकता है। खास बात यह है कि इस सुविधा के इस्तेमाल के लिए किसी भी प्रकार का शुल्क नहीं देना है, आप बेफिक्र होकर इसे उपयोग कर सकते हैं।

क्या हैं फायदे

डिजिटल लॉकर की सबसे बड़ी खासियत है कि स्टोर दस्तावेजों को इसके जरिए कहीं भी जमा कर सकते हैं। इसके अलावा एजुकेशनल, मेडिकल, पासपोर्ट और पैन कार्ड को डिजिटल रूप में रखा जा सकता है। विद्यार्थी या वे लोग जो हर रोज किसी न किसी प्रतियोगी परीक्षा या नौकरी के लिए ऑनलाइन एप्लाई करते हैं, जिससे उन्हें साथ में डॉक्यूमेंट्स भी लेकर घूमना पड़ता है, डिजिटलीकरण से उन्हें इससे छुटकारा मिलेगा। साथ ही नौकरी की तलाश में एक शहर से दूसरे शहर में जाने के लिए सफर के दौरान दस्तावेजों को खोने के डर से भी निजात मिल जाएगी, क्योंकि कई बार यात्रा के दौरान अंकपत्र और प्रमाणपत्र खोने की भी खबरें मिलती रहती हैं जिसमें अब कमी आ सकती है।

कितना सुरक्षित:

डिजिटल लॉकर में सुरक्षा का बेहद ख्याल रखा गया है। इसके सुरक्षा की चाबी आधार कार्ड पर दिए नंबर पर आने वाले वन टाइम पासवर्ड में छुपी होगी। बिना मोबाइल फोन पर आए पासवर्ड के लॉकर को खोलना नामुमकिन है। इसके अलावा इस पर अपलोड ऑनलाइन डाटा विदेशों के सर्वर पर नहीं जाएगा, जिससे हैकर्स से भी बचा जा सकता है। डिजिटल लॉकर सरकारी विभाग की वेबसाइट से लिंक रहेगा, जिससे फर्जीवाड़े में भी कमी आएगी। ✠

साभार: कामता सिंह अमर उजाला

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

समसामयिकी

जिहादी कर रहे हैं गिरिजाघरों में तोड़-फोड़

जो लोग भारत को उन्नत और शक्तिशाली नहीं देखना चाहते, वे कई प्रकार के षड्यंत्र कर वर्तमान केंद्र सरकार को कमजोर और बदनाम करने की चाल चल रहे हैं। एक समूह ईसाइयों के गिरिजाघरों पर हमले करवा रहा है। चर्च में तोड़-फोड़ करवाई जाती है और मीडिया चैनल उसको बढ़ा चढ़ा कर बताते हैं। दूसरे दिन समाचार पत्र इसको ऐसे प्रकाशित करते हैं, मानो कोई राष्ट्रीय आपदा आ गई हो। लेकिन यह, षडयंत्र पिछले दिनों तब उजागर हुआ जब आगरा के एक चर्च पर हमले के आरोपी पकड़े गए। गत 16 अप्रैल को आगरा के प्रतापपुरा में सेण्ट मेरी गिरिजाघर में तोड़-फोड़ हुई थी। इस घटना का विभिन्न चैनलों और अंग्रजी अखबारों में जम कर प्रचार हुआ। कुछ दिनों बाद हमला करने के आरोप में नसीर, जफर और जफरूद्दीन नाम के अपराधी पकड़े गए। स्पष्ट है कि कट्टरपंथी जिहादी गिरिजाघरों पर हमलों के षड्यंत्र कर रहे हैं, ताकि आपसी सौहार्द नष्ट हो तथा केंद्र सरकार कटघरे में खड़ी हो।

साभार पाथेय कण।

पृष्ठ 19 का शेष.....

* शरीर में पानी की कमी हो जाने पर मामूली नमक, तीन चम्मच शक्कर, एक चम्मच खाने के सोडे को पानी में घोल कर पिएं। साथ ही अधिक मात्रा में पानी का सेवन भी करते रहें। यह शरीर में नकम व पानी की कमी को पूरा करता है।
* उल्टी दस्त होने पर शरीर में पानी की कमी होने से मृत्यु तक हो सकती है, अत: इसमें पहले तरल पदार्थ जैसे शिकंजी, चावल का उबला पानी, पानी व चीनी का घोल इत्यादि पिलाया जाता है।
* पानी कब्ज दूर करने का सबसे सस्ता व सरल उपाय है। सुबह उठते ही दो गिलास ताजा पानी पिएं। इससे कब्ज तो दूर होती ही है, साथ ही पेट संबंधी बीमारियां भी उत्पन्न नहीं होतीं।
* दमे के रोगियों को भी जल का अधिक सेवन बहुत लाभ पहुंचाता है।
* रक्तचाप कम होने पर दिन में अधिक से अधिक पानी का सेवन करें।
* वैसे भी रोजाना 8-10 गिलास पानी पीने से शरीर स्वस्थ व तरो ताजा रहता है, साथ ही सौंदर्य में वृद्धि भी होती है। साभार: पंजाब केसरी

पृष्ठ संख्या 12 का शेष. . . संस्कृति की पक्षधरता को सिद्ध करते हैं। पहले गांवों में लोक नाट्य और लोक संगीत ही था। ग्राम्य संस्कृति पहलेबनी थी और शहरी संस्कृति बाद में। छोटे और गरीब कलाकारों की भी पहचान होनी चाहिए। हमारे लोक नाट्यों में जो नाटियां हैं, वे समाज में बराबरी की भावना लाने का एक सशक्त माध्यम है। वस्तुत: डॉ. परमार लोकगीत व लोकनृत्य के तो भक्त ही थे। लोक कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए वे उनके साथ शिरकत करते। माला नृत्य में कदम से कदम मिलाकर नाचने का तो जैसे उन्हें पूरा ज्ञान था। लोक पर्वों, तीज त्यौहारों व मेलों उत्सवों के अवसर पर वे प्राय: उपस्थित रहते। लोक पकवानों के शौकीन डॉ. परमार मुख्यमंत्री बनने के बाद भी जब गांव में जाते तो स्वयं ही असकली, सिड़कू, पहड़े व स्थानीय पकवानों की मांग करते और जनसाधारण के साथ पंक्तियों में बैठकर पत्तल में भोजन करते। सरलता व सादगी की प्रतिपूर्ति डॉ. परमार की एक विशेषता यह रही कि उन्होंने आर-पार व ऊपर नीचे का भेद न करके हिमाचल का समान विकास किया। इससे भी बढ़कर एक और खास बात कि उन्होंने अपने लिए कुछ भी संग्रह नहीं किया जिसका जीता जागता उदाहरण आज भी उनके पैतृक गांव में बना वही पुराना साधारण सा मकान है। नि:संदेह आज का विशाल हिमाचल उनकी अनथक मेहनत व लग्न का साकार रूप है। डॉ. परमार ने अपने जीवनकाल में एक राजनेता के रूप में हिमाचल प्रदेश को जिस रूप में पाया उसे और भी सुदृढ़ विकसित और पर्वतीय आदर्श राज्य बनाकर 25 वर्षों तक निरन्तर इसकी सेवा की। कृषि, वानिकी एवं बागबानी के क्षेत्र में प्रदेश ने जो नए आयाम स्थापित किए हैं नि:संदेह उसके श्रेयस्पात्र डॉ. परमार ही हैं। एक कुशल बागवान, लोकप्रिय राजनीतिज्ञ, लोककला व संस्कृति के संरक्षक डॉ. परमार ने 2 मई सन् 1981 को इहलीला समाप्त करके भले ही स्वर्ग गमन कर लिया किन्तु उनकी छवि हिमाचल के प्रत्येक कोने में बराबर प्रतिबिम्बित होती है तथा युगों तक होती रहेगी। ✠

इस झंडे को प्रणाम करो

अगस्त 1907 का तीसरा सप्ताह था। मैडम कामा को पता चला कि जर्मनी स्थित स्टुटगार्ट में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन का आयोजन होने वाला है। गुलाम भारत की दु:स्थिति का विश्वजनमत के सम्मुख पर्दाफाश करने का मैडम कामा के लिए यह सुनहरा मौका था। विश्व के अनेकों देशों के एक हजार प्रतिनिधि सम्मेलन में भाग ले रहे थे। भारत की बारी आने पर मैडम कामा मंच पर चढ़ीं। उसने रंगीन साड़ी पहनी हुई थी। श्रेष्ठता की आभा से उसका मुखमण्डल दमक रहा था। प्रतिनिधियों को लगा यह तो भारत की राजकन्या है। मानवजाति का पांचवा हिस्सा भारत में बसता है। स्वतंत्रता प्रेमी सभी ने सोचा कि इन लोगों को गुलामी से छुड़ाने में योगदान देना चाहिए। साहस के साथ सम्मेलन में रखे उसके प्रस्ताव का यह आशय था। अंग्रेज सरकार का धिक्कार करते हुए उसने कहा कि वे प्रतिवर्ष भारत से साढ़े तीन करोड़ रूपया लूट रहे हैं।

उसने स्पष्ट किया कि भारतीय अर्थव्यवस्था अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा हो रहे शोषण के कारण दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। भाषण के अंत में उसने भारतीय झंडा फहराते हुए कहा भारतीय स्वतंत्रता का यह झंडा है। देखो यह आ गया है। जीवन का बलिदान करने वाले तरूणों के खून से यह पावन हुआ है। मैं आपका आवाह्न करती हूं सज्जनों, उठो और भारतीय स्वतंत्रता के इस झंडे को प्रणाम करो। इस झंडे के नाम पर मैं समस्त विश्व के स्वतंत्रता प्रेमियों से प्रार्थना करती हूं कि इस झंडे से सहयोग करें। जादू से जकड़ जाने के भांति सारा श्रोतवृंद उठ खड़ा हुआ और उन्होंने झंडे का सम्मान के साथ अभिवादन किया। मैडम कामा वह महिला थी जिसने विदश्श की भूमि पर, अनेक देशों के प्रतिनिधियों के बीच भारत का झंडा सर्वप्रथम फहराया। अपने देश के झंडे तले बोलने की मेरी परिपाटी है यह कहते हुए वह किसी समारोह में बोलने से पहले, झंडा फहरा देतीं।

वह पावन झंडा

मैडम कामा और कुछ अन्य देशभक्तों ने मिल कर सन् 1905 में तिरंगे झंडे का प्रारूप तैयार किया। सर्वप्रथम बर्लिन में सन् 1905 में और बाद में बंगाल में सन् 1907 में यह झंडा फहराया गया। तिरंगे झंडे में तीन रंग के पट्टों-हरा, केसरी व लाल का समावेश था। सब से ऊपर हरे रंग के पट्टे में आठ खिलते हुए कमल अंकित थे। भारत के तत्कालीन आठ प्रदेशों के ये आठ कमल प्रतीक थे। बीच में केसरी पट्टे पर देवनागरी लिपि में 'वंदे-मातरम्' ये शब्द भारतमाता के अभिवादन स्वरूप अंकित थे। सबसे नीचे लाल पट्टे में दाहिनी तरफ अर्धचंद्र एवं बांयी तरफ उगता सूरज चित्रित था। लाल रंग बल, केशरी रंग विजय और हरा रंग साहस तथा उत्साह दर्शाता है। मैडम कामा ने बताया इस झंडे का प्रारूप एक सुविख्यात, नि:स्वार्थ, युवा भारतीय देशभक्त ने बनाया था। ✠

विश्व मोहन बनेंगे हिमाचल के दूसरे सबसे कम उम्र के प्रशासनिक अधिकारी

सरकारी स्कूल में पढ़े छात्र ने पहले ही प्रयास में संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा पास की है। वे हिमाचल से दूसरे सबसे कम उम्र के प्रशासनिक अधिकारी बनेंगे। उन्होंने 1173वां रैंक हासिल किया है। हिमाचल में सबसे कम उम्र में आईएएस बनने का रिकॉर्ड वर्तमान में उपायुक्त कांगड़ा रितेश चौहान के नाम है। रितेश चौहान 21 साल 11 महीने में वर्ष 2005 में आईएएस बने थे। विश्वमोहन ने 22 साल और 17 दिन में यूपीएससी की परीक्षा पास की है। बिलासपुर के घुमारवीं निवासी विश्व मोहन प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की आठवीं, दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा में प्रदेश भर में टॉपर रहे हैं। 14 दिसंबर सन् 1992 में जन्में विश्वमोहन ने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला बिलासपुर से अपनी पढ़ाई पूरी की। उनके नाम सबसे कम उम्र में इंजीनियरिंग करने का भी रिकॉर्ड है। विश्व मोहन ने नेट भी उत्तीर्ण किया है। ✠

पहेली

1. गर्मी में तुम मुझको खाते,
मुझको पीना हरदम चाहते,
मुझसे प्यार बहुत करते हो,
पर भाप बनूं तो डरते भी हो।

2. तुम न बुलाओ मैं आ जाऊँगी,
न भाड़ा न किराया दूंगी,
घर के हर कमरे में रहूंगी,
पकड़ न मुझको तुम पाओगे,
मेरे बिन तुम न रह पाओगे,
बताओ मैं कौन हूं?

3. मुझमें भार सदा ही रहता,
जगत घेरना मुझको आता,
हर वस्तु से गहरा रिश्ता,
हर जगह मैं पाया जाता
4. ऊपर से नीचे बहता हूं,
हर बर्तन को अपनाता हूं,
देखो मुझको गिरा न देना
वरना कठिन हो जाएगा भरना।

5. लोहा खींचू ऐसी ताकत है,
पर रबड़ मुझे हराता है,
खोई सूई मैं पा लेता हूं,
मेरा खेल निराला है।

उत्तर 1. पानी, 2. हवा, 3. गैस, 4. द्रव्य, 5. चुंबक।

चटकुले

1. एक आदमी को रोज सपने में एक महिला काली साड़ी में दिखाई देती थी। आदमी उसे देखकर घबरा जाता था। एक दिन उसने हिम्मत करके पूछा- देवी आप कोन हैं?
महिला बोली- मैं धन की देवी लक्ष्मी हूं,
आदमी: फिर तो आपको गोल्डन कलर का होना चाहिए।
महिला: बेटा! मैं ब्लैक मनी हूं, स्विस बैंक से आई हूं।

2. मास्टर जी: 50 आदमियों को खिलाने के लिए 5 किलो दाल लगती है तो बताओ कि 75 आदमियों के लिए कितनी दाल की आवश्यकता होगी?
छात्र: सर, दाल उतनी ही लगेगी, केवल पानी और डालना पड़ेगा।

3. महिला (डॉक्टर से): दांत निकाल दीजिए।
डॉक्टर: मुंह खोलो।
महिला : लो खोल दिया।
डॉक्टर: थोड़ा और खोलो।
महिला ने थोड़ा मुंह और खोल दिया।
डॉक्टर: थोड़ा और खोलो।
महिला ने सारा मुंह ऊपर किया।
डॉक्टर: थोड़ा और खोलो।
महिला (क्रोध में): क्या मुंह में बैठकर ही दांत निकालने का विचार है?

प्रश्नोत्तरी

1. रावण के दरबार में दूसरी बार श्री राम जी का दूत बनकर कौन गए थे?
2. भारतीय रेल ने किस ट्रेन का नाम बदल कर योग एक्सप्रेस कर दिया है?
3. किसने दिल्ली महिला आयोग अध्यक्ष का पदभार सम्भाल लिया है?
4. भारतीय मूल के किस 17 वर्ज़ीय छात्र ने प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय गणित ओलंपियाड जीता है?
5. हाल ही में अमेरिका से कितने और समुद्र टोही विमान बोइंग पी-8 आई खरीदने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है?
6. देश में प्लास्टिक से बनाए जाने वाले किस उत्पाद के इस्तेमाल, खरीद और बिक्री पर प्रतिबंध लगाने के लिए सरकार एक आदेश जारी करने वाली है?
7. प्रसिद्ध पराशर झील किस स्थान पर है?
8. इतिहास के संकलन के लिए स्थापित 'ठाकुर जगदेव चंद संस्थान' किस स्थान पर है?
9. हिमाचल प्रदेश में प्रस्तावित स्मार्ट सिटी की संख्या कितनी है?
10. हिमाचल प्रदेश का एकमात्र सरकारी आयुर्वेदिक महाविद्यालय कहां पर स्थित है?